श्री श्रीष चन्द्र दीक्षित

मुख्य परामर्षदाता

पूर्व सांसद व पूर्व फलिस महानिदेषक

श्री भारतेन्दु प्रकाष्ठा सिंघल

राष्ट्रीय प्रधाान

पूर्व सांसद) राज्य सभा) व पूर्व फलिस महानिदेषक

मे . ज .) से – नि .) विष्वास स . जोगलेकर

राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधाान

संपादक

प्रो0 सतीष चन्द्र

संपादक मंडल

डॉ महेष्ठा चन्द्र

देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाधयाय

प्रो0 श्री धार पन्त, डॉ0 रामषरण गौड़

प्रकाषक व मुद्रक

देवेन्द्र मित्तल) उपप्रधाान)

प्रकाषन स्थान

3308, सेक्टर–डी–3 वसंत कुंज,

नई दिल्ली – 110070

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 800/-
		Annual 100/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 15

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	**:**	**Rs.**	**15000/-**
Inner Cover	**:**	**Rs.**	**12,000/-**
Full Page	**:**	**Rs.**	**10,000/-**
Half Page	**:**	**Rs.**	**5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed
Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
3308- Sector-D, Vasant Kunj,
New Delhi-110070

एक्सेलप्रिन्ट, सी–36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली–110 055

गौरव घोष

G A U R A V G H O S H

BI-MONTHLY द्विमासिक

BIK-MONTHLY

वर्ष 10 अंक 4 विषय सूची वैशाख ज्येष्ठ 2066 वि मई 2009

संपादकीय आवरण दो		
गोस्वामी तुलसीदास जी की रामराज्य की अवधारणा		4
भारतीय संस्कृति		9
हिन्दू किधर जा रहे हैं ?	*–रामगोपाल*	11
एक दुःस्वप्न	*–डॉ. शशिकांत गर्ग*	12
भारतमाता का ऋण उतारने का समय आ गया है		14
सम्राट श्री कृष्णदेव राय के राज्याभिषेक की पाँच सौ वीं वर्षगांठ		16
असली नकली संवेदनाएं	*–सुभाषिनी अली सहगल*	17
भारत में ईसाइयत और इस्लाम के राजनैतिक उद्देश्य	*–डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल*	18
अब 'लव जिहाद'		20
मुस्लिम रचनाकारों का श्रीराम के प्रति समर्पणभाव	*–बद्रीनारायण तिवारी*	21
श्रद्धांजलि		25
पाठक विचार सारणी		26
Distressing is the enveloping night'	***-Murtaza Razvi***	27
Bhagwat, a unifier within Sangh family		28
Deciphering Indus script a tough task		30
List of Govt schemes, projects named after Nehru-Gandhis		31
Diary of Events, Select Articles, Book Reviews and Letter		35

संपादकीय

अप्रैल-मई 2009 के दौरान विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र हिन्दुस्थान में पांच चरणों में आम चुनाव शांतिपूर्वक संपन्न हुए। यह एक संतोष की बात है। पन्द्रहवीं लोकसभा का गठन के साथ ही नई सरकार ने देश की बागडोर संभाली। लोकतंत्र में चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जो सत्ता की चाबी जनता को देकर यह संदेश देता है कि जनता पिछली सरकार के कार्य-निष्पादन पर चिंतन करे और इस चाबी को ऐसे समर्थ और विश्वसनीय प्रतिनिधियों को सौंपे जिनके हाथों में देश और जनता का भविष्य सुरक्षित रहे।

देश और उसकी जनता का भविष्य अनादिकाल से चली आ रही देश की सनातन संस्कृति और सभ्यता की अक्षुण्णता पर निर्भर है लेकिन क्या ऐसा हो रहा है, यह एक चिंतनीय विषय है। इसका उत्तर हमें मतदान के प्रति दिनोंदिन उदासीनता और परिणामत: उसके घटते प्रतिशत और दूसरी ओर आम चुनाव में राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को मज़हब के नाम पर, जाति के नाम पर बाँटने विशेषकर, केवल अल्पसंख्यकों के हितों की बात कर चुनाव जीतने की घिनौनी राजनीति से मिलता है। इसका प्रमाण 1 जून 2009 के हिन्दी के दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' में छपी यह खबर है :-

'अल्पसंख्यक बहुल जिलों में ही पार्टी जीत गई 42 लोकसभा सीटें - महज 'पैगाम' से ही हो गया कांग्रेस का काम'

जब 30 से 40 प्रतिशत मतदान ही देश का भविष्य निर्धारित करता है तो इस बात में कोई आश्चर्य नहीं है। राजनीतिक पार्टियां अल्पसंख्यकों की बेहतरी का राग अलापते हुए बहुसंख्यक लोगों के हित को ताक पर रख देती हैं। उन्हें तो सत्ता की चिंता है न कि देश की।

तुष्टिकरण की नीति के संबंध में **'परोपकारी'** पाक्षिक पत्रिका के जून 2009 के अंक के संपादक प्रो. धर्मवीर का यह मत है कि "सरकार की जिस नीति से इस देश की बड़ी हानि होने वाली है, वह है इसकी तुष्टिकरण की नीति। जिस सरकार ने चुनाव जीतने के लिए तुष्टिकरण को हथियार की तरह प्रयोग किया हो, उससे सफलता पाई हो, वह इस हथियार को क्यों छोड़ना चाहेगी। जिस सरकार का प्रधानमंत्री अल्पसंख्यकों को इस देश का पहले दर्जे का नागरिक घोषित करता हो, अल्पसंख्यकों के लिए उनकी संख्या के अनुपात से पन्द्रह प्रतिशत बजट राशि आवंटित करता हो, वह आतंकवाद विराधी पोटा कानून को इसलिए रद्द करता है क्योंकि उसे मुसलमान अपना विरोधी समझते हैं। वह अपने भरोसे को कैसे समाप्त होने देगा, बल्कि यह समझने के अवसर अधिक हैं कि तुष्टिकरण की नीति को यह सरकार अधिक बढ़ावा देगी। बहुसंख्यक लोगों की बात पहले भी नहीं सुनी जाती थी इसलिए आज भी उनकी ताकत पहले से कम हुई है। ... जिस प्रकार मुस्लिम तुष्टिकरण हमारी राजनीति का अंग है वहाँ ईसाइयत को विशेष प्रश्रय देना भी हमारी सरकार का मंतव्य है। .... हिन्दू और हिन्दुत्व सांप्रदायिक शब्दावली के हिस्से हैं। इसी प्रकार गोरक्षा का मुद्दा भी इस सरकार के लिए विशेष महत्व नहीं रखता।"

इसी प्रकार जब सत्ता हाथ में आ जाती है तो यह बात भुला दी जाती है कि किस भाषा के बलबूते पर चुनाव लड़ा गया, संविधान में किस भाषा को संघ की राजभाषा/राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त है। यहाँ

तक कि जनता को धन्यवाद देने, शपथ लेने के लिए भी हमारे राजनीतिबाज़ अंग्रेज़ी को अधिमानता देते नज़र आते हैं। उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं है कि अंग्रेज़ी हमारी गुलामी की निशानी है। यह देश के गाँवों और शहरों में रह रही आम जनता की भाषा नहीं है। तथ्य यह है कि यह केवल देश में 2-3 लाख लोगों की ही मातृभाषा है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि राजकाज भी इसी भाषा में हो रहा है और आशंका ही नहीं बल्कि वास्तविकता है कि हमारे शासकवर्ग की इस मंशा को देखते हुए अगले पाँच साल के दौरान भी राजकाज इसी भाषा में होगा और इस प्रकार हिन्दी फिर अगले पाँच साल तक संविधान के पन्नों में सिमट कर रह जाएगी।

देश हित को सर्वोपरि रखकर उसकी अस्मिता को अक्षुण्ण रखने, आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त करने, सभी के साथ न्याय करने, देश के सर्वांगीण विकास करने के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा कार्य करना है तो हमें सुशासन अर्थात् रामराज्य का अनुसरण करना होगा।

संपादक

भारतीय जीवन मूल्य

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामराज्य की अवधारणा

-डॉ. रामशरण गौड़

राजा और राज्य से संबंधित प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह कहा जाता है कि आरंभ में पृथ्वी पर न कोई राजा था न राज्य, व्यक्ति के अपने गुण ही उसे स्वयं ही नियंत्रित रहने के लिए बाध्य करते थे। 'वाल्मीकि रामायण' का कथन है कि ब्रह्म स्वरूप कृतयुग (सतयुग) में पृथ्वी पर कोई राजा नहीं था। संपूर्ण प्रजा बिना राजा के ही थी -

आसन् कृतयुगे राम ब्रह्मभूते पुरा युगे।

अपार्थिवा: प्रजा: सर्वा सुराणां त शतक्रतु:। (7/76/36)

'महाभारत' में उल्लेख मिलता है कि पहले न तो कोई राजा था न राज्य और न कोई दंड था न दंड देने वाला। सभी मनुष्य अपने-अपने धर्म का ही अनुपालन करते थे। उनका धर्म ही एक-दूसरे की रक्षा करता था। बाद में उनके धर्मविहीन आचरण करने पर उनको अनुशासित करने के लिए राजा के पद को प्रतिष्ठित किया गया -

न वै राज्यं न राजाऽसीन्न च दंडो न दांडिक:।

धर्मेणैव प्रजा: सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम्

(शांतिपर्व - 59/14)

तदनंतर शासन-व्यवस्था के परिचालन के लिए सभा और समितियों को निर्मित किए जाने लगा। परंतु यह व्यवस्था विशुद्ध लोकतांत्रिक व्यवस्था थी। समिति सर्वसाधारण जनता द्वारा गठित और स्वीकृत होती थी। इसके द्वारा ही राजा का चयन किए जाने लगा। यह इतनी महत्त्वपूर्ण होती थी कि इसमें सभी लोगों की उपस्थिति अनिवार्य थी तथा निर्वाचित राजा के लिए भी समिति की सभी बैठकों में आना अनिवार्य था। (ऋग्वेद-9/92/6) ये राजा लोकतंत्र व्यवस्था के अभिन्न अंग और मुखिया के रूप में कार्य करते थे। प्राचीन भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था संपत्ति की असमानता, पारस्परिक विवाद और लोकतंत्रीय शिथिलता के कारण इतनी दुर्बल हो गई कि उनके नेतृत्व का आधार पैतृक-परंपरा मात्र ही रह गया और समाज में एक अराजकता का आभास होने लगा और यहीं से राज्य-व्यवस्था और दंड-व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। तदनंतर शासन-व्यवस्था की पूर्ण बागडोर एक व्यक्ति राजा के हाथ में आने लगी। भारत के अधिकांश क्षेत्रों में शासन-व्यवस्था

राजतंत्र में परिवर्तित होती चली गई थी। भारत के अनेक क्षेत्रों में लोकतांत्रीय संघ-व्यवस्था के सूत्र भी मिलते हैं। परंतु ये सभी समाप्त होते जा रहे थे। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में उल्लेख किया है कांबोज और सौराष्ट्र देशों के क्षत्रिय वैश्य आदि वर्गों के संघ कृषि, व्यापार और शस्त्रादि के द्वारा जीविकोपार्जन करते हैं। लिच्छिविक, व्रजिक, मल्लक, कुकुर, कुरु और पांचाल देशों के राजाओं के केवल नाममात्र के संघ होते हैं -

'कांबोजसुराष्ट्रक्षत्रियश्रेण्यादयो वार्ताशस्त्रोपजीविनः।

लिच्छिविकव्रजिकमल्लकमद्रककुकुरपांचालादयो

राजशब्दोप जीविनः।

(प्रकरण-160/2)

लोकतांत्रिक संघों में पारस्परिक दोष, द्वेष, वैर और कलह आदि में वृद्धि हो रही थी। इसकी पुष्टि भी अर्थशास्त्र द्वारा होती है।

इसे भारत का सौभाग्य ही कहा जा सकता है कि यहाँ के ऋषियों ने मनुष्य के जीवन के मार्ग और समाज के कल्याण के मार्ग का दिशा निर्देश किया। चाहे बाद में जाकर उन सभी मूल्यों की मनुष्य द्वारा उपेक्षा कर दी गई हो और उसके दुष्परिणाम भी भुगते हों परंतु भारत के ऋषि मनुष्य के जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्न करते रहे जैसा कि ऋग्वेद और 'अथर्ववेद' की निम्नलिखित प्रार्थनाओं से प्रमाणित होता है -

इंद नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः

पूर्वेभ्यः पथिकृद्भयः। *(ऋग्वेद - 10/14/15)*

(अपने पूर्वज ऋषियों के लिए जिन्होंने आरंभ में जीवन के मार्ग को बनाया हमारा नमस्कार ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे

ये देवनां हुतभागा इह स्थ *(अथर्ववेद - 18/3/25-35)*

(हम जीवन के मार्ग के बनाने वाले तथा समाज का कल्याण करने वाले अपने पूर्वजों का यजन करते हैं। यज्ञों में देवताओं के समान वे भी हमारे लिए पूजनीय और यजनीय हैं)

राज्य-व्यवस्था चाहे वह लोकतंत्रीय हो या राजतंत्रीय एक व्यक्ति (राजा या मुखिया) के अधीन होने के कारण ऋषियों ने अपने दायित्व-बोध का निर्वाह करते हुए राजा के गुणों को रेखांकित करना आरंभ कर दिया और उन गुणों का आचरण करने के लिए नैतिक दबाव भी बनाया। 'मनुस्मृति' में कहा गया है कि इस संसार में सर्वत्र अराजकता फैलने से ईश्वर ने राजा को बनाया -

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्।

रक्षार्थमस्य सर्वस्व राजानमसृजत्प्रभुः। *(7/3)*

परंतु मनुस्मृति ने उसे सत्यवादी, समीक्षा करने वाला और धर्म, अर्थ तथा काम का ज्ञाता कहा है तो विषयासक्त, क्रोधी और क्षुद्र विचार वाले राजा का मारा जाना भी निश्चित माना है -

तस्याहुः संप्रणेतारं राजानं सत्यवादिनम्।

समीक्ष्यकारिणं प्राज्ञं धर्मकामार्थकोविदम्। *(मनुस्मृति-7/26)*

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते।

कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते। *(मनुस्मृति-7/27)*

यहाँ पर उल्लेख किया गया है कि निर्दिष्ट मर्यादा को न मानने वाला, नास्तिक, वृथा दंडादि देकर धन लेने वाला, रक्षा न करके प्रजाओं का अंश खाने वाला राजा अधोगति को प्राप्त होता है।

अनपेक्षितमर्यादं नास्तिकं विप्रलुंपकम्।

अरक्षितारमत्तारं नृपं विद्यादधोगतिम्। *(मनुस्मृति-8/309)*

'वाल्मीकि रामायण' में इंद्रिय-निग्रह, मन का संयम, क्षमा, धर्म, धैर्य, सत्य, पराक्रम तथा अपराधियों का दंड देना ये राजा के गुण माने गए हैं।

दमः शमः क्षमा धर्मो धृतिः सत्यं पराक्रमः।

पार्थिवानां गुणा राजन दंडश्चाप्यपकारिषु।। *(4/17/19)*

यहाँ कहा गया है कि इस लोक में केवल सामनीति अथवा शांति के द्वारा न तो कीर्ति की प्राप्ति की जा सकती है, न यश की वृद्धि होती है और न संग्राम में ही विजय ही प्राप्त की जा सकती है -

स साम्ना शक्यते कीर्तनं साम्ना शक्यते यशः।

प्रासुं लक्ष्मालोकेऽस्मिञ्जयो व रणमूतिर्धन । *(6/21/16-17)*

नीति, विनय, सत्य और पराक्रम इत्यादि राजोजित गुण जिस राजा में स्थित रहते हैं वही देश और काल के तत्त्व को जानने में समर्थ होता है और ऐसा राजा ही देश की रक्षा कर सकता है -

न यश्च विनयश्चोभौ यस्मित् सत्यं च सुस्थितम्।

विक्रमश्य यथा दृष्टः स राजा देशकालवित्। (4/18/8)

'महाभारत' के अनुसार जो राजा सभी के साथ कोमलता का व्यवहार करता है तो लोग उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और जो केवल कठोर व्यवहार करता है तो लोग उससे उद्विग्न और क्षुब्ध हो जाते हैं अतः उसमें कोमलता और कठोरता का संतुलन बनाए रखने की क्षमता होने की कामना की जाती है -

मृदुर्हि राजा सततं लंघ्यो भवति सर्वशः ।

तीक्ष्णाचोद्विजते लोकस्तस्मादुभयमाश्रय। *(शांतिपर्व-56/21)*

'महाभारत का कथन है कि प्रजा को राजा के हित के लिए अपना बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए उद्यत होना चाहिए। यहाँ तक राज्यहित के लिए उसे परिजनों का भी त्याग या उपेक्षा करनी पड़े तो कर देनी चाहिए जैसे असमंजस राजा ने अपने पुत्र का त्याग कर दिया -

असमंजाः सुतो ज्येष्ठस्त्यक्तः पौरहितैषिणा। *(शांतिपर्व- 57/8)*

कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में राजा के विद्यावृद्ध पुरुषों की सत्संगति करने पर बल दिया है, क्योंकि संपूर्ण विनय की प्राप्ति उन्हीं से की जा सकती है -

अस्य नित्यश्च विद्यावृद्ध संयोगो विनयवृद्यर्थ तन्मूलत्वाद्विनयस्य।

(प्रकरण-2/4/5)

इसके साथ ही कौटिल्य इंद्रिय-निग्रह को राजा के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। उनका कथन है कि राजा को काम, क्रोध, लोभ, मान, मद और हर्ष के त्याग से इंद्रियों पर विजय करनी चाहिए -

"विद्याविनयहेतुरिंद्रियजयः;कामक्रोधलोभमानमदहर्ष त्यागात्कार्यः।"

इस प्रकार भारत के मनीषियों ने लोक-कल्याण की भावना को मानव और समाज के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए राजा के उदात्त गुणों से संपन्न और इंद्रियजित् होने की संभावना ही नहीं की गई, बल्कि ऐसे राजाओं के लंबी शृंखला रही, जिनका एकमात्र उद्देश्य प्रजाहित था। तुलसी का युग शासकों द्वारा भारतीय प्रजा के साथ किए जाने वाले अन्याय और अत्याचारों की पराकाष्ठा का युग था। सूंपर्ण प्रजा शासकों, उनके पैरोकारों और चाटुकारों के लिए धन एकत्रित करने में लगी रहती थीं। जीवित रहने के लिए शासन को भारी कर देने होते थे, जिससे उनको दरिद्रता में जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता था। शासकों के ऐशो आराम, उनकी विलासिता में कोई कमी न थी। निर्धन हिन्दू जनता धन के अभाव

के कारण संकट और दरिद्रता में अपने जीवन को ढो रही थी। उन्हें महामारी, दुर्भिक्ष तथा अभावों का सामना स्वयं ही करना पड़ता था, शासन तक न कोई इसकी सूचना पहुँचाता था, न शासन को प्रजा के कुशल-क्षेम को जानने की परवाह थी न उन्हें अवसर ही था। मुगल शासक अपने राज्य को स्थिर रखने में ही पूरे बल और कौशल का परिचय दे रहे थे। तुलसी ने तत्कालीन जनता की आर्थिक दुर्दशा का हृदय-विदारक वर्णन अपनी कृति में किया है -

खेती न किसानको, भिखारीको न भीख, बलि,

बनिकको बनिज, न चाकर को चाकरी।

जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस।

कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी। ***(कवितावली-7/97)***

एक ओर किसानों पर अन्याय और अत्याचार हो रहे थे तो दूसरी ओर पथिकों को लूटा जाता था और ब्राह्मणों से तो करोड़ों कुमार्गों से धन इकट्ठा किया जाता था। इन संकट और पीड़ाओं का परिचय तुलसी ने 'कवितावली' में दिया है। वे भारत की त्रस्त और दीन-हीन जनता की दुर्दशा को देखकर इतने दुखी हुए कि अन्यायियों को शाप देने के लिए उद्यत हो गए -

मारग मारि, महीसुर मारि, कुमारग कोटिक कै धन लियो।

संकटकोपसों पापको दाम परिच्छित जाहिगो जारि कै हीयो।

कासीमें कंटक जेते भये ते गे पाइ अघाइ कै आपनो कीयो।

आजु कि कालि परों कि नरो जड़ जाहिंगे चाटि दिवारी को दियो।

'जिन्होंने अन्याय से धन एकत्रित किया है तथा गरीबों को सताया है वे आज, कल परसों या नरसों दिवाली का सा दिया चाटकर जाएंगे।

भारतीय हिन्दू समाज की यह दुर्दशा देखकर तुलसी ने श्रुतिसम्मत आदर्श और सद्‌गुणों से विभूषित राजा को खोजने का प्रयास किया और उनकी दृष्टि वाल्मीकि का अनुसरण करते हुए धर्म को जानने वाले, सत्य से युक्त, प्रजा की भलाई में लगे हुए, कीर्ति और ज्ञान से युक्त, पवित्र, मन और इंद्रियों को वश में रखने वाले राम की ओर गई -

धर्मज्ञः सत्यसंधश्च प्रजानां च हिते रतः।

यशस्वी ज्ञान संपन्नः शुर्चिवश्यः समाधिमान्। ***(रामायण-1/12)***

तुलसी को प्रजा के सभी कष्टों के निवारण का उपाय राम और उनके राज्य में दिखलाई पड़ा। दुराचारी, अन्यायी, अज्ञानी, विषयी राजा से जनता के हित की कामना करना उन्हें निरर्थक ही लगा। ईश्वरों के ईश्वर, महाराजों के महाराज और देवों के देव होते हुए भी तुलसी के राम अपनी महिमा के दंभ से मोहित नहीं हैं, वे अत्यंत सावधान हैं -

ईसनके ईस, महाराजनके महाराज,

देवनके देव, देव ! प्रानहुके प्रान हौ।

x x x x x x x x

महिमा अपार, काहू बोलको न पारावार,

बड़ी साहबीमें नाथ ! बड़े सावधान हौ।

(कवितावली - 7/125)

राजा (मुखिया) राजतंत्र का हो या लोकतंत्र का भारतीय ऋषियों ने उसमें आदर्श, सद्‌गुणों और आप्तपुरुषत्व के होने की कामना की थी, जिससे समाज और राष्ट्र में विषमता, अन्याय और कष्टों को दूर किया जा सके तथा आनंद और सुख-समृद्धि का वातावरण उत्पन्न किया जा सके। यही कामना तुलसी की रही है। वे ऐसे राजा की कामना करते हैं जो भारत की खोयी प्रतिष्ठा, मनोबल, आत्मविकास की शक्ति को वापिस ला सके और उसके राज्य में संतप्त मानव-समाज

को चैन से साँस लेने का सुअवसर मिल सके। तुलसी की ये सभी संभावनाएं अयोध्यापति दशरथ पुत्र राम में दिखलाई पड़ीं। यद्यपि तुलसी ने राम के सुशासन के संकेत राम द्वारा रावण-वध के बाद से दिए हैं। तथापि इसके सूत्र राम के युवराज पद पर अभिषेक की षोषणा के साथ ही देखने को मिलते हैं और 'रामराज्य' के सूत्र उनके समस्त काव्य में बिखरे पड़े हैं।

तुलसी के समय में अपने शत्रुओं के प्रति जितना घृणास्पद और हिंसात्मक व्यवहार किया जाता था उससे उन्होंने स्वयं साक्षात्कार किया था। किसी भी राज्य या शासक के पराभूत हो जाने पर उसकी संपत्ति की तो लूट-खसोट होती ही थी, परंतु उसकी स्त्रियों और परिवारजनों के साथ जिस प्रकार का कुत्सित व्यवहार किया जाता था, वह मनुष्य के मनुष्य होने पर लानत डालता है। सत्ता-प्राप्ति के लिए भाई से भाई, और पिता से पुत्र संघर्ष कर रहा था। उनके एक दूसरे के प्रति किए जाने वाले हिंसात्मक और घृणास्पद व्यवहार के उदाहरण मध्यकालीन इतिहास में भरे पड़े हैं। तुलसी के मर्यादा पुरुषोत्तम राम रावण-वध के बाद विभीषण को रावण की क्रिया करने के लिए कहते हैं और रावण की क्रिया में भाग लेने के लिए लक्ष्मण को समझाते हैं। वे रावण की पत्नी मंदोदरी के शील-सम्मान का पूरा ध्यान रखते हैं -

बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा,
तब प्रभु अनुजहि आयुस दीन्हा।
लक्षिमन तेहि बहु बिधि समुझायो,
बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो।
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका,
करहु क्रिया परिहरि सब सोका।
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी,
बिधिवत देस काल जियँ जानी।
मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुपति गुन गन बरनत मन माहि।

(रामचरितमानस-6/105)

बारहवीं शताब्दी से लेकर तुलसी के समय तक प्रजा के हित का कोई शासक ध्यान ही नहीं करता था। सभी शासक अपने-अपने राज्य-विस्तार के लिए निरंतर रक्तपात के उद्योग में लिप्त थे। राज्य-विस्तार के लिए अनेक छल-कपट के दाँव-पेच अपनाए जाते थे। राजाओं और शासकों के कुकृत्यों से मानवता कराह रही थी। रावण का वध करने के पश्चात राम ने लंका का राज्य रावण के भाई विभीषण को सौंप दिया और उसका राजतिलक कराने के लिए लक्ष्मण को कहा और उनके साथ अंगद, नल, जामबंत और हनुमान को भेजा। राम को रावण के अन्याय और अत्याचारों से विरोध था, किसी की सत्ता हथियाने का लाभ नहीं -

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो।
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ।
सब मिलि जाहु विभीषन साथा । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा।

(रामचरितमानस-6/106)

रावण का राज्य एक निरंकुशता, अत्याचार और अन्याय का शासन था जहाँ किसी भी व्यक्ति को कष्ट देने में वह कोई भी कसर नहीं छोड़ता था। सर्वत्र भय, शोक और मानसिक-शारीरिक कष्टों से लोग त्रस्त थे। कोई भी अपने को स्वतंत्र नहीं समझता था। रावण अपनी दुर्नीति से ही देव, यक्ष, गंधर्व, नर, किन्नर और नाग आदि सभी जातियों पर अपना आधिपत्य जमाये हुए था -

भुज बल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।

मंडलीक मनि रावण राज करइ निज मंत्र।

(रामचरितमानस-1/182)

इसके विपरीत राम के राजसिंहासन पर बैठते ही समाज में व्याप्त विषमता, भय, शोक और मानसिक एवं शारीरिक कष्टों से छुटकारा मिल गया था, क्योंकि सभी अपनी-अपनी मार्यादाओं के अनुरूप कर्तव्य और दायित्वों का पालन कर रहे थे -

राम राज बैठे त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका।

बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।

(रामचरितमानस-7/20)

राम के राज्य में जहाँ दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों से जनता संतप्त नहीं थीं, वहीं आर्थिक विपन्नता, दुख और दीनता भी जनता में दिखाई नहीं पड़ती थी। जब अज्ञानी, संस्कारहीन, दंभी, कर्तव्य और अकर्तव्य की समझ न रखने वाले, गुणहीन और चाटुकार राजसत्ता के निकट पहुँच कर सुशासन को कुशासन बनाते हैं तो ऐसा शासन शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

क्रमशः अगले अंक में

भारतीय संस्कृति

...... (पिछले अंक से आगे का शेष भाग)

वास्तव में संस्कृति किसी एक ही वस्तु या स्थिति का बोधक शब्द नहीं है इसमें 5 महत्त्वपूर्ण तत्त्व, यथा - **एक देश , एक समाज, एक धर्म, एक भाषा-साहित्य और एक इतिहास, सम्मिलित हैं और इन सबके सामूहिक ज्ञान को ही संस्कृति कहते हैं।**

भारतीय संस्कृति का अभिप्राय जानने के लिए उसके संदर्भ में संस्कृति के उक्त पाँचों तत्त्वों के आधार पर विचार करना होगा, यथा -

भूमि : जहाँ तक भारत की भूमि का संबंध है, उसकी व्याख्या भारत के अनेक प्राचीन ग्रंथों है यथा - वेदों, पुराणों, महाभारत, बार्हस्पत्य शास्त्र आदि में की गई है। अथर्ववेद में कहा गया है कि -

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा। समुद्रे यस्यं रसाभिदाहु:।।
इमाश्च में प्रदिशो यस्यबाहू। कस्मैदेयाय हविषा विधेम।।

अर्थात् हिमवान् पर्वत जिसकी महिमा का बखान कर रहा है, नदियों सहित सागर जिसके यथोगान में मग्न है और बाहू सदृश दिशाएं जिसकी कीर्ति गाथा सुना रही हैं उस परम प्रभु को हम अपना हविष्य समर्पित करें। (अ. 12.1.12)

उक्त भाव को ही विष्णु पुराण में इस रूप में कहा गया हैं

उत्तरं यत्समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र संतति:।।

अर्थात् समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में फैले संपूर्ण भू-भाग का नाम भारत है और इसकी संतान भारतीय हैं। (विष्णु 2.3.1)

भारत भूमि की विशेषता बताते हुए अपने एक भाषण में डॉ. राधााकृष्णन ने महाभारत का एक श्लोक उद्धृत किया था (हमारी विरासत, पृष्ठ 34) जो कि इस प्रकार है -

यथा समुद्रो भगवान् यथा मेरुर्महागिरि:।
उभौ ख्यातौ रत्ननिधि तथा भारतमुच्यते।।
अर्थात् जैसे भगवान् समुद्र और हिमवान् पर्वत दोनों ही रत्नों की खान हैं, वैसे ही भारत भी रत्नों से परिपूर्ण है। (महा. आदि 56-77, पूना संस्कारण)

इस प्रकार न केवल वैदिक ऋषियों के ही वरन् पुराणकर्ताओं और शास्त्रकारों के समक्ष भी भारतीय संस्कृति के प्रथम तत्त्व भूमि के रूप में हिमालय से हिन्द महासागर तक का समस्त भूखण्ड भारतवर्ष ही रहा है अर्थात् भारतीय संस्कृति का प्रथम तत्त्व भारत ही उसकी भूमि या देश है।

भूमि पर रहने वाले लोग या समाज : जहाँ तक भारत भूमि या देश में रहने वालों का प्रश्न है, वह तो विष्णु पुराण के उक्त श्लोक (2.3.1) से ही स्पष्ट हो चुका है कि इस देश की संतान भारतीय हैं।

धर्म : महाभारत में कहा गया है -'धारणात् धर्ममित्याहु धर्मो धारयते प्रजा' (महा.व.प.15.37) जो समाज का, व्यक्ति का धारण करे, वही धर्म है अर्थात् धर्म ही व्यक्ति या समाज को धारण करता है। व्यक्ति और समाज का संबंध धरती से होता है। अत: हर देश या समाज का धर्म वही होता है, जिसका जन्म एवं विकास उसी के भूखण्ड की माटी में ही हुआ हो। स्वाभाविक है कि इस देश और इसके समाज का धर्म भी वही होगा जिसकी जड़ें, भारत भूमि की माटी से जुड़ी होंगी। इस देश के लिए ऐसा धर्म 'सनातन धर्म' ही है। **वैष्णव, शैव, जैन, बौद्ध, सिख आदि इसी विराट सनातन धर्म के मत-मतान्तर हैं।**

भाषा और साहित्य : भारत विश्व का सबसे प्राचीन देश है तथा भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है और भारत का सबसे पूज्य ग्रंथ ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ है, जो कि संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है। स्पष्ट है कि विश्व की **सर्वाधिक प्राचीन भाषा संस्कृत ही इस देश, धर्म और समाज की मुख्य भाषा रही होगी।** संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की वाहिका है। इसमें श्रेष्ठतम ज्ञान, से युक्त विश्व का प्रथम ग्रंथ ही नहीं, अन्य साहित्य भी बड़े परिमाण में सुलभ हैं।

इतिहास : इतिहास किसी भी देश, समाज और संस्कृति का एक चिट्ठा होता है जिसमें पूर्वकाल में घटित घटनाओं का सही ब्यौरा सुलभ रहता है। इसके निर्माण का उद्देश्य यही होता है कि जिस जाति का वह इतिहास है, वह अपने अतीत से शिक्षा लेकर, वर्तमान को ठीक करके भविष्य का निर्माण करे। ऐसा इतिहास उन घटनाओं पर आधारित होता है जो वास्तव में घटित हों, काल्पनिक या निर्देशित नहीं। जबकि वर्तमान में सुलभ भारत का इतिहास विजयी जाति द्वारा विजित जाति का निर्देशित इतिहास है। **भारत का वास्तविक इतिहास भारत के प्राचीन ग्रंथों में ही सुलभ है और वही भारतीय संस्कृति का आधारभूत पाँचवां तत्त्व है।**

उक्त विश्लेषण से यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि **हिमालय के दक्षिण में हिन्द महासागर तक की भूमि या देश भारत है, इस भूमि या देश के लोग या समाज भारतीय हैं, यहाँ का सनातन धर्म भारतीयत्व का मुखर स्वर है, यहाँ की भाषा संस्कृत और उसका गरिमा युक्त साहित्य भारत देश और उसके समाज का असली दर्पण है तथा पुराणों में वर्णित भूमि और समाज का इतिहास ही वास्तविक रूप में भारत का सच्चा इतिहास है। इन सब तत्त्वों का सामूहिक ज्ञान ही भारतीय संस्कृत का ज्ञान है।**

'श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा की पुस्तक 'विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति' से साभार

हिन्दू किधर जा रहे हैं ?

*-रामगोपाल**

हाल (फरवरी 2009) ही में, कुछ ही दिनों के अंतराल में तीन विशिष्ट हिन्दू विरोधी घटनाएं हुईं। पहली है, भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान के हिन्दूधर्मी नागरिकों के आवेदन पत्रों को ठुकराना जिनमें उन्होंने हरिद्वार में गंगाजी में अपने दिवंगत प्रियजनों की अंतिम इच्छानुसार उनकी अस्थियां विसर्जित करने की अनुमति मांगी थी। अस्वीकृति का कारण यह बताया गया कि आवेदकों को हरिद्वारवासी किसी भारतीय नागरिक धर्मपिता या धर्ममाता (स्पॉन्सर) द्वारा नामांकित किया जाना चाहिए। तुर्रा यह है कि भारत में क्रिकेट मैच देखने या अजमेर की ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर चद्दर चढ़ाने के लिए आने वाले पाकिस्तानी मुसलमानों से यह माँग नहीं की जाती। विदेशों से केवल सैर-सपाटे के लिए आने वालों पर भी ऐसा कोई बंधन नहीं है। फिर भी किसी हिन्दू धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक संगठन ने यह मामला नहीं उठाया। उधर, 200 पाकिस्तानी हिन्दू परिवारों ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को इस विषय पर हस्तक्षेप करके उन्हें अस्थि विसर्जन के लिए भारतीय धर्मपिता-धर्ममाता के लिए दबाव न डालकर अनुमति पत्र (वीसा) दिलवाने के लिए प्रार्थना की है (समाचार स्रोत : अंग्रेजी दैनिक 'मेल टुडे' 10 फरवरी 2009)।

दूसरी घटना है कलकत्ता से प्रकाशित 'द स्टेट्समैन' (अंग्रेज़ी दैनिक) समाचार पत्र के संपादक रविन्द्र कुमार और प्रकाशक आनन्द मिश्रा को पश्चिमी बंगाल पुलिस द्वारा, मुस्लिम गुंडों के दबाव में दिनांक 11 फरवरी को बंदी बनाया, यद्यपि अगले दिन उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया। उन पर आरोप था कि उन्होंने अपने दैनिक के 5 फरवरी 2009 के अंक में एक लेख "Why should I respect such oppressive religions" (मैं ऐसे क्रूर धर्ममतों का आदर क्यों करूँ) छापा था। कहते हैं कि इस लेख में इस्लाम के लिए अशोभनीय बातें लिखी हैं। किन्तु, यह लेख तो पहले ही लंदन के एक समाचार पत्र, 'द इंडिपेंडेंट' में दिनांक 28 जनवरी को छप चुका था। वहाँ तो मुसलमानों की ओर से कोई बवेला नहीं मचा। भारत में ही उस लेख पर कोलकाता में हायतोबा मचाई गई और पश्चिमी बंगाल सरकार उनकी तुष्टीकरण के लिए तत्काल क्रियाशील हुई। साफ है कि इस्लामी जगत भारत के हिन्दू समुदाय को सबसे ज्यादा निर्बल देखता है, इसलिए मुसलमानों के विरुद्ध संसार में जब भी कहीं कुछ होता है, तो मुस्लिमों का क्रोध भारत में हिन्दुओं की बलि देकर शांत होता है। यह मामला भी हिन्दू नेताओं, धर्मगुरुओं को जगा नहीं पाया।

तीसरी घटना है, भारत सरकार (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) का निश्चय जिसके अंतर्गत इस्लामी मदरसों द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्रों को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सेंट्रल बोर्ड ऑफ हायर सेकेण्डरी एजुकेशन) के प्रमाणपत्रों के समकक्ष किया जा रहा है, जिससे मदरसे में शिक्षाप्राप्त मुसलमान युवक भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश पा सकें। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय ने पहले ही अपने यहाँ प्रवेश के लिए मदरसा प्रमाणपत्रों को मान्यता दे दी है। सभी जानते हैं कि इस्लामी मदरसों के पाठ्यक्रम उर्दू माध्यम द्वारा कुरान, हदीस और सुन्ना तथा तद्‌विषयक पुस्तकें पढ़ाना है जिससे शिक्षित मुल्ले, मौलवी, उलेमा मस्जिदों, मदरसों और वक्फ बोर्डों में जाकर इस्लाम की अधिकाधिक सेवा कर सकें। यह भी सर्वविदित है कि इस्लाम की मज़हबी पुस्तकें और राजनैतिक सिद्धांत घोर हिन्दू-विरोधी ही नहीं बल्कि भारतीय संविधान के मूल सिद्धांत सर्वपंथ समभाव (सेक्युलरवाद) के घोर विरोधी हैं। इस्लामी देशों में मुस्लिम उलेमा प्रजातंत्र को भी इस्लाम विरोधी मानते हैं। मदरसे विद्यार्थियों को यही पाठ पढ़ाते हैं कि सभी गैर-मुसलमान, विशेषकर हिन्दू 'काफिर' (मज़हब द्रोही) हैं। ऐसी शिक्षा प्राप्त युवक या युवतियां जब सरकारी पदों पर आसीन होंगे तब उनसे 'सर्वपंथ समभाव' की रक्षा करना तो असंभव ही होगा।

तथापि, उपरोक्त सभी वास्तविकताओं की अनदेखी कर, हिन्दूधर्मी समुदाय का समस्त ध्यान मंगलूर के एक 'पब' (युवाओं का मदिरालय) में शराब पीकर अर्द्धनग्न युवक-युवतियों द्वारा नाचने-गाने और अश्लील हरकतें करने वालों पर स्थानीय 'हिन्दू सेना' के कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा कथित जोराजारी या मारपीट पर रहा। लगभग, देश के सभी समाचार पत्र-पत्रिकाएं उनकी भर्त्सनाओं से दो सप्ताह तक भरे पड़े रहे। यहाँ तक कि केन्द्रीय समाज सेवा और कल्याण मंत्री श्रीमती रेणुका चौधरी कह गईं कि मंगलूर का तालिबानीकरण अर्थात् मंगलूर जिले का प्रशासन हिन्दू उग्रवादियों के हाथ

में चला गया है, जहाँ कोई हिन्दू स्त्री किसी मुसलमान युवक से बात नहीं कर सकती। यह कथन, कम से कम अपनी हिन्दू जड़ों से उखड़ी नई पीढ़ी को अपने ही धर्म और संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए सरासर भड़काने वाला है। इस नई शिक्षित पीढ़ी ही क्या उनके अभिभावकों, लेखकों और वक्ताओं को भी 'तालीबानीकरण' का अर्थ नहीं पता। इसका अर्थ है कुरान आधारित संविधान, शासन प्रणाली और संस्कृति जो इस्लामी मदरसों में पढ़ाई जाती है, यानि नीच से नीच मुसलमान को भी महात्मा गाँधी या मदनमोहन मालवीय जैसे प्रसिद्ध हिन्दुओं से भी ऊँचा मानना, समस्त मुस्लिमेतर मानव समाज को 'काफिर' (जान से मार देने योग्य) समझना, उनकी संपत्ति, स्त्री-बच्चों को मालेगनीमत (लूट का माल) समझकर मुसलमानों द्वारा जब चाहे हथिया लेना, स्त्रियों को केवल भोग-विलास और बच्चे पैदा करने की मशीन मानकर उन्हें बुर्के में रखना, पुरुष द्वारा अपनी किसी भी ब्याह करके लाई पत्नी को किसी भी समय बिना कारण बताए तलाक देना, एक पुरुष तथा दो स्त्रियों की गवाही को बराबर मानना, इस्लाम की आलोचना करने वाले या इस्लाम मत छोड़कर दूसरे धर्ममत में जाने वाले को मृत्युदण्ड देना, मुस्लिमेतर धर्मस्थलों (मंदिर, गुरुद्वारे, चर्च आदि) को नष्ट करना मुसलमानों का जन्मसिद्ध अधिकार है, आदि-आदि इस्लामी कानून में न्याय सम्मत है। ये सब हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार सरासर अन्याय है और घोर अतिवादी हिन्दू भी इस प्रकार का प्रावधान स्वीकार नहीं करेगा।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि हिन्दू समाज, हिन्दू नेता और हिन्दू धर्माचार्य कहाँ सो रहे हैं ? हिन्दू धर्माचार्यों और उनके संस्थानों ने तो मठ-मंदिर निर्माण, पूजा-पाठ, आरती, भोग, भंडारे के कर्मकाण्ड में लिप्त हैं। लगता है कि अपवादों को छोड़कर अधिकांश हिन्दू समाज अपने वैदिक अथवा सनातन धर्म से कट चुका है और इस्लामी या ईसाई गोद में जा बैठने को तैयार बैठा है। क्या इनके हिन्दू पूर्वज जो लगातार 700 वर्षों (12वीं से 19वीं शताब्दी तक) पहले इस्लामी और फिर इंगलिस्तानी शासन के विरुद्ध अपने हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति की रक्षा में लड़ते-मरते रहे और जिनके कारण आज भी हमारी हिन्दू पहचान शेष है, महामूर्ख थे ? क्यों नहीं वर्तमान हिन्दू पीढ़ी समझ पाती कि यदि वह हिन्दू भारत को हिन्दू राज्य नहीं बना पाती तो इस देश का इस्लामी राज्य बनना अवश्यम्भावी है। उसी के लिए पाकिस्तान सहित समस्त मुस्लिम जगत् प्रयत्नशील है। उन्हीं के धन, हथियारों और विस्फोटों से 25 वर्षों से सिख या मुस्लिम आतंकवादी अपनी गतिविधियां बढ़ाते जा रहे हैं। इनकी आतंकी वारदातें निरुद्देश्य नहीं हैं वरन् डरा-धमकाकर बिना सीधा युद्ध लड़े हिन्दू संसार को इस्लामी झंडे के नीचे लाना है।

** स्वतंत्र लेखक और पत्रकार*
ए-2बी, एकता अपार्टमेंट्स, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

एक दुःस्वप्न

मैं स्वप्न में टी.वी. देख रहा था। देखते देखते अचानक स्क्रीन से सारे दृश्य गायब हो गए तथा स्क्रीन पर कुछ अक्षर उभरने लगे, जो कि इस प्रकार थे .... "भारत पर पाकिस्तान का नाभकीय आक्रमण, अहमदाबाद के आकाश में मिसाइल द्वारा अणु बम का विस्फोट किया गया। लाखों लोगों की मृत्यु तथा करोड़ों पर रेडियो धर्मी असर की आशंका"

इसके बाद स्क्रीन पर नेताओं की प्रतिक्रियाएं आनी शुरू हो गईं जो कि इस प्रकार थीं -

1. भारत तुरंत अणुबम का उत्तर अणुबम से दे .... नरेन्द्र मोदी

2. हम जल्दबाज़ी में कुछ नहीं करेंगे। ..... मनमोहन सिंह

3. सरकार जो करे सोच समझ कर करे। .... सोनिया गाँधी

4. पाकिस्तान की सरकार की गलती की सजा वहाँ की निर्दोष प्रजा को नहीं दी जानी चाहिए। .... मुलायम सिंह

5. गोधरा के मुसलमानों के अपराधों की सजा जिस प्रकार गुजरात भर के मुसलमानों को दी गई, वैसा हम नहीं कर सकते। .... लालू प्रसाद यादव

6. मनमोहन सिंह को नरेन्द्र मोदी बनने से रोका जाना चाहिए .... रामविलास पासवान

इसके बाद विभिन्न दलों के नेताओं के बीच चर्चा का अयोजन हुआ। यह चर्चा चल ही रही थी कि इसे बंद करके फिर से स्क्रीन पर शब्दों का आना शुरू हो गया, "चण्डीगढ़ के आसमान में पाक का दूसरा अणु विस्फोट"। नेताओं की प्रतिक्रियाएं ......

1. यदि पहले अणु विस्फोट को मिनटों में उत्तर दिया जाता तो आधे घंटे में दूसरे अणु बम का विस्फोट न होता ... लाल कृष्ण आडवाणी

2. आडवाणी जंग खोरों की भाषा बोल रहे हैं। ..... मनमोहन सिह

3. हम मौत के सौदागरों के निर्देश पर सरकार नहीं चला सकते ..... सोनिया गाँधी

4. यह गांधी का देश है हम हिंसा का जवाब हिंसा से नहीं दे सकते ..... रामविलास पासवान

5. गुजरात और राजस्थान के हज़ारों लागों के रिश्तेदार पाकिस्तान में रहते हैं, हमें उनकी भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए ..... लालू प्रसाद यादव

6. भारत- भारत है, हम पाकिस्तान के मार्ग पर कैसे चल सकते हैं। ..... मुलायम सिंह यादव

फिर से स्क्रीन पर राजनेताओं में चर्चा का आरंभ हुआ। दुबारा चर्चा आरंभ हुए अभी आधा घंटा हुआ कि फिर से स्क्रीन पर अक्षर आने लगे .... "जयपुर के आकाश में तीसरा अणु विस्फोट। तालिबान ने जिम्मेदारी ली"

मैं चीखा, बेटा दिव्या सब लोग बेसमेंट में चलो। दिव्या दौड़कर आई, बोली "दादाजी क्या हुआ" मेरा सपना टूट चुका था, मैं शर्माकर दिव्या की ओर देखने लगा। पौत्री ने कहा "दादाजी क्या कोई डरावना सपना देखा" मेरे मुख से निकला यदि देश में तुष्टीकरण इसी प्रकार चलता रहा तो यह स्वप्न सच भी हो सकता है।

डॉ. शशिकांत गर्ग

152/2 अहीर वाडात्र बल्लभगढ़,

जिला-फरीदाबाद-121 004 (हरियाणा)

भारतमाता का ऋण उतारने का समय आ गया है

–विजय नगर साम्राज्य स्थापना दिवस 1 मई पर

मित्रों, वह युगाब्द 4425 (सन् 1323) की जन्माष्टमी का दिन था। कर्णाटक राज्य की राजधानी द्वारसमुद्र में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। कर्णाटक नरेश बल्लाल देव यह उत्सव दूसरी ही तरह मना रहे थे। उस समय उत्तरी भारत आक्रमणकारी सुल्तानों से पदाक्रान्त हो रहा था। कुछ वर्षों पहले अलाउद्दीन खिलजी का एक सरदार मलिक काफूर दक्षिण में भयंकर तबाही कर गया था। गयासुद्दीन तुगलक के सिपहसालार जूना खाँ ने उस समय भी वारंगल को घेर रखा था। देश में आए उस भीषण संकट के समय भी बल्लाल देव को चक्रवर्ती बनने की धुन सवार थी। पाँच राज्यों को वह अब तक जीत चुका था मदुरा और वारंगल उसके अगले निशाने थे। सात राजमुकुटों को अपने पैरों में झुकाकर चक्रवर्ती कहलाने की महत्त्वकांक्षा उसके मन में थी। जन्माष्टमी से पहले उसके सेनापति संगमराय मदुरा के पाण्ड्य संघ के प्रमुख सोमैया नायक को बंदी बना लाए थे। उस दिन कर्णाटक के भरे राजदरबार में छठें राजा पर विजय का उत्सव मनाया जा रहा था।

मलिक काफूर से डट कर लोहा लेने वाले तथा आखिर तक विदेशियों से संघर्ष का संकल्प किए वीरवर सोमैया नायक को महिलाओं के वस्त्र पहनाकर तथा रस्सियों से बाँधकर दरबार में लाया गया था। केवल उनके हाथ खुले थे। नायक को सामने देखकर बल्ला देव के मंत्री ने कहा –

"सोमैया नायक अब तुम कर्णाटक के अनुगत हो, अत: पहले हमारे कुलदेवता को और फिर होयसलराज को प्रणाम करो, ताकि तुम्हें बन्धन मुक्त किया जा सके।"

वीरश्रेष्ठ सोमैया नायक कुछ उत्तर देते उसके पहले ही उन्हें बन्दी बनाने वाले संगमराय ने होयसलराज बल्लाव देव से निवेदन किया – ***"महाराज यह क्यों ? आपने मुझे वचन दिया था कि नायक सोमैया से वीरों जैसा व्यवहार करेंगे, पर आप तो इनका अपमान कर रहे हैं।"***

"हम वचन पर दृढ़ हैं, संगमराय । लेकिन पराजित को अपनी मर्यादा का भी तो ध्यान होना चाहिए। हमें प्रणाम करना कोई अपमान की बात तो नहीं।", बल्लाल देव ने कहा।

तभी सभा–भवन में एक ज़ोरदार अट्टहास गूंजा। यह तीखी हँसी सोमैया नायक की थी। आँखें बंद किए खड़े नायक ने जैसे होयसलराज को चुनौती देते हुए कहा, ***"कौन विजयी और कौन पराजित है, बल्लाव देव, पराजित तो यह धरती हो रही है। तुरुष्कों के एक के बाद एक आक्रमण हमारी इस मातृभूमि पर हो रहे हैं और अभी तक हम व्यक्तिगत स्वार्थों में ही डूबे हुए हैं, घोर आश्चर्य है।"***

फिर संगमराय को संबोधित करते हुए सोमैया नायक ने कहा – ***"वीरवर संगम, इस पूरी सभा में दर्शनीय व्यक्ति एक तू ही है। जा, मेरी चिन्ता मत कर, मेरे भले–बुरे का दायित्व महाकाल पर है, तुझ पर नहीं।"***

संगमराय ने यह सुना तो होयसलराज से कहा – ***"महाराज सोमैया नायक के अपमान का दुष्परिणाम कर्णाटक को भुगतना होगा"*** इसके बाद वे सभा भवन से चल दिए।

बल्लाल देव को सोमैया नायक तथा संगमराय की बातों से क्रोध आ रहा था। रोष में आकर उन्होंने संगमराय को बंदी बनाने का आदेश दे दिया। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पावन अवसर पर कुछ अनहोनी होने लगी थी। जैसे ही कुछ सैनिक संगमराय को बन्दी बनाने के लिए आगे बढ़े, सभा–भवन में मज़बूत कदकाठी वाला एक तेजस्वी नौजवान प्रकट हुआ। नागिन की तरह लपलपाती एक विकराल तलवार भी उसके हाथ में थी। पूरी राजसभा संगमराय के पुत्र उस तेजस्वी नवयुवक हरिहर को देखकर स्तब्ध रह गई। सभा में सिंह–गर्जना करते हुए उसने कहा –

"सावधान होयसलराज। कुछ करने से पहले उसके परिणामों पर भी विचार कर लीजिए। तुरुष्कों ने हमारे देश के उत्तरी भाग को पद–दलित कर दिया है। दक्षिण पर भी उनके आक्रमण फिर से प्रारंभ हो गए हैं। हम यूं ही आपस में लड़ते रहे तो पूरा देश पराधीन हो जाएगा। हमारी संस्कृति को यदि जीवित रखना है तो हमें वीरों का सम्मान करना सीखना होगा।"

हरिहर का चुनौतीपूर्ण स्वर सुनकर बल्लाल देव और क्रोधित हो गए। क्रोध में होंठ चबाते हुए उन्होंने कहा, ***"कौन हो तुम ? कैसे इस सभा-भवन में आ गए ? क्या तुम्हें राज-सभा के व्यवहार का तनिक भी ज्ञान नहीं है ?"***

"मैं संगमराय का पुत्र हरिहर हूँ, महाराज। जाति से कुरुब (गड़रिया) हूँ इसलिए राजसभाओं के नियमों को क्या जानूँ। पर आप यादव वंश के सूर्य हैं, बल्लाव देव, इसलिए विनती कर रहा हूँ कि सोमैया नायक को वीरोचित सम्मान के साथ मुक्त कर दें और अपनी तलवार के जौहर तुरुष्कों के विरुद्ध दिखाएं", नौजवान ने उत्तर दिया।

तनिक-सा रुक कर हरिहर ने फिर कहा - ***"आपको वारंगल ही चाहिए था चक्रवर्ती बनने के लिए, कृष्णा जी नायक आपके लिए वारंगल ले आए हैं।"***

यह कहकर हरिहर ने अपने पीछे खड़े कृष्णा जी को संकेत किया। कृष्णा जी के एक हाथ में तलवार और दूसरे में एक गठरी थी। सभाभवन में आगे आकर उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर किए तो उनकी तलवार से मानों बिजली-सी कौंधने लगी।

"होयसलराज मैं आपके लिए वारंगल ले आया हूँ। जानते हैं इस गठरी में क्या है ? देखिए और जरा सावधानी से देखिए", यह कहते हुए उन्होंने तलवार से कपड़ा हटाया तो कृष्णाजी के हाथ में एक कटा हुआ मस्तक दिखाई दिया। सारी राजसभा एकदम से अचंभित और भयग्रस्त हो गई। ऐसी शांति छा गई कि एक सूई भी गिरे तो उसकी आवाज़ सुनाई दे। कृष्णा जी ने फिर कहना शुरु किया -

"होयसलराज ! यह मस्तक वारंगल के महाराज प्रतापरुद्र का है। तुरुष्कों ने वारंगल को मिट्टी में मिला दिया है। जानते हैं कि यह मस्तक किसने काटा है ? वारंगल की राजमाता रुद्रमाम्बा ने। उनके बूढ़े हाथ अपने पुत्र का मस्तक काटने में ज़रा भी नहीं काँपे। वारंगल के धवस्त होने के पहले राजमाता ने मुझे बुलाया। राजभवन में महाराज प्रतापरुद्र बैठे थे। पास में राजमाता हाथ में तलवार लिए खड़ी थीं। बल्लाव देव! जानते हैं राजमाता ने क्या कहा ?"

राजसभा में उस समय उत्तर देने की स्थिति में तो कोई था ही नहीं। सभी पत्थर की मूर्ति बने कृष्णाजी नायक की अद्भुत गाथा को सुन रहे थे। कृष्णा जी ने कहना जारी रखा।

"राजमाता रुद्रमाम्ब ने मुझसे कहा - ***"श्रीकृष्ण जी, तुरुष्कों से लड़ते हुए हमारे सभी सैनिक मारे गए, कभी भी वारंगल का पतन हो सकता है, जानता है मैंने तुझे क्यों बचा रखा है, इसलिए कि तू अब वारंगल से निकल सके। जा बेटा तूफान की गति से जाकर होयसलराज को मेरा संदेश दे देना"*** यह कहकर राजमाता ने महाराज प्रतापरुद्र की ओर देखा। महाराज ने हाथ जोड़कर सिर झुका दिया। तब राजमाता ने तलवार के एक वार से महाराज का मस्तक काट लिया और मुझे देते हुए कहा - ***"यादव कुल बसंत बल्लाल को यह मस्तक देना और कहना कि भारत माता के ऋण को उतारने का समय आ गया है, माताएं जिसके लिए पुत्र को जन्म देती हैं वह उद्देश्य पूरा करने का समय भी अब आ गया है। उनसे कहना कि प्रतापरुद्र का मस्तक प्राप्त कर चक्रवर्ती बनने की इच्छा तो उनकी पूरी हो गई पर विदेशी तुरुष्कों के विरुद्ध एकजुट होने में अब देर न करें।" अतः होयसलराज ..."*** कृष्णाजी ने अपना संदेश आगे बढ़ाते हुए कहा,

".....यह राजमाता का संदेश मैं आपके लिए लाया हूँ। अब भी आप इस संदेश को नहीं समझेंगे तो दुनिया की कोई शक्ति आपको कुछ नहीं समझा सकती।"

होयसलराज वीर बल्लाल ने यह संदेश समझ लिया। उस समय के श्रेष्ठ तपस्वी कालमुख विद्यारण्य महाराज के प्रयत्नों से तुरुष्कों की आंधी को रोकने का एक महान् अभियान दक्षिण में चल रहा था। संगमराय, उनका पुत्र हरिहर, सोमैया नायक, महाराज प्रतापरुद्र, कृष्णाजी नायक जैसे सेनानी पूरे दक्षिणपथ को संगठित करने में लगे हुए थे। राजमाता रुद्रमाम्बा का विलक्षण संदेश मिलने के बाद बल्लाल देव भी इस अभियान में सम्मिलित हो गए। इसी के परिणामस्वरूप विजयधर्म और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई। राय हरिहर इसके पहले महामण्डलेश्वर बने।

'पाथेय कण' (पाक्षिक), जयपुर, 16 अप्रैल (द्वि) 2009 से साभार

सम्राट श्री कृष्णदेव राय के राज्याभिषेक की 500वीं वर्षगांठ

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा विजयनगर साम्राज्य के विश्वविख्यात सम्राट श्री कृष्णदेव राय के ईस्वी सन् 1510 में हुए राज्याभिषेक को भारतीय इतिहास की एक निर्णायक घड़ी मानती है।

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना ई. सन् 1336 में हिन्दू धर्म व संस्कृति की रक्षा के घोषित लक्ष्य के साथ उस समय की गई थी जब मुस्लिम आक्रान्ताओं के बर्बर हमले के कारण हिन्दू धर्म व संस्कृति का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया था। इस साम्राज्य की स्थापना संत विद्यारण्य की आध्यात्मिक शक्ति तथा हरिहर व बुक्क राय के शौर्य का संयुक्त प्रतिफल थी।

शांति व स्थिरता, आर्थिक समृद्धि, उन्नत कला-साहित्य व स्थापत्य, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और कूटनीति तथा सौहार्दपूर्ण एवं आनंदप्रय सामाजिक जीवन के कारण विजयनगर साम्राज्य को विश्व इतिहास में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। देशी विदेशी इतिहासकारों ने इसे भारत के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय तथा अविस्मरणीय साम्राज्य कहा है।

शालिवाहन शक संवत् 1431 की माघ शुक्ल चतुर्दशी (24 जनवरी 1510) के दिन श्री कृष्णदेव राय का राज्याभिषेक संपन्न हुआ। वे एक वीर योद्धा, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, कलाविद् व विद्वान होने के साथ-साथ दयालु शासक भी थे। उन्होंने दूरगामी प्रशासनिक, न्यायिक व कृषि सुधार किए। उनके शासन में जल प्रबंधन प्रणाली को सर्वाधिक वैज्ञानिक माना जाता है। उनके शासन में साम्राज्य का विस्तार संपूर्ण दक्षिण भारत में हुआ और गौरव के उच्च शिखर पर पहुँचा।

'हिन्दूराय सुरत्राण' की उपाधि से विभूषित श्री कृष्णदेव राय यदि एक आदर्श हिन्दू सम्राट के प्रतीक थे तो **विजय नगर साम्राज्य एक आदर्श हिन्दू राज्य का उदाहरण था।** भविष्य में होने वाले हिन्दू सुदृढ़ीकरण के सभी प्रयासों के लिए यह प्रेरणा का स्थाई स्रोत रहा है।

अ.भा.प्रतिनिधि सभा का मत है कि सम्राट श्री कृष्णदेव राय के राज्याभिषेक की 500 वीं वर्षगांठ समारोह के आयोजन से भारतवर्ष के इतिहास के एक स्वर्णिम अध्याय की स्मृतियां उजागर होंगी और इससे हमारे देशवासियों, विशेषकर युवाओं के मन में आत्मगौरव व विश्वास की भावना बढ़ेगी। अत: वह समस्त देशवासियों का आवाहन करती है कि वे विजयनगर साम्राज्य के गौरव पर प्रकाश डालने वाले विविध कार्यक्रमों का आयोजन करें।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा केन्द्र व राज्य सरकारों से मांग करती है कि :

1. विजयनगर साम्राज्य की राजधानी स्थल हम्पी (कर्णाटक) में सभी अतिक्रमणों को तत्काल हटाया जाए।
2. इस ऐतिहासिक स्थल के पवित्र स्थानों व स्मारकों को सुरक्षित व संरक्षित किया जाए।
3. पहले से ही विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित इस स्थान को इस प्रकार विकसित किया जाए कि इससे प्रेरणादायी स्मृतियाँ पुन: जागृत होने के साथ-साथ देशी व विदेशी पर्यटकों के समक्ष इतिहास के इस स्वर्णिम अध्याय का सही चित्रण प्रस्तुत किया जा सके।
4. इस अवसर की स्मृति में डाक टिकट जारी किया जाए।

समष्टि संदेश, रांची, अप्रैल 2009 से साभार

असली-नकली संवेदनाएं

राहुल गाँधी की सक्रियता पर सुभाषिनी अली सहगल की राय

हमारे देश के 'युवराज' को राजमहल से निकलकर गरीबों और दलितों की झोपड़ियों में झांकने का बहुत शौक है। वह कभी किसी कलावती, कभी सरस्वती तो कभी सुनीता के घर जा धमकते हैं। उनका हालचाल पूछते हैं। कभी उनकी सूखी रोटी का एक कौर खा लेते हैं। उन्होंने दलित की झोपड़ी में रात भी बिताई। राजकुमार के ये प्रयोजन पूर्वनियोजित होते हैं। उनके साथ मीडिया का जमावड़ा होता है। थोड़ी दूर उनका काफिला भी खड़ा होता है। राजकुमार गरीबों की दुर्दशा पर आश्चर्य और शोक प्रकट करते हैं। इसके कारणों पर वह कभी चर्चा नहीं करते और न ही उन झोपड़ियों में रहने वाले गरीब दलितों को अपने राजमहल में आकर दावत खाने या रात बिताने का निमंत्रण देते हैं। आखिर वह ऐसा क्यों करते हैं ? शायद उन्हें ढाई हज़ार साल पहले पैदा हुए कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ के प्रति गरीबों और शोषितों की असीम, अटूट आस्था के बारे में किसी ने बताया हो। शायद राजकुमार को लगता हो कि सिद्धार्थ की तरह वह भी देशवासियों के हृदय में हमेशा के लिए स्थान पा सकते हैं। सिद्धार्थ विभिन्न कलाओं में निपुण थे। ज्ञान-विज्ञान और दर्शन में भी उनकी गहरी रुचि थी। यशोधरा से उनका विवाह हुआ और एक पुत्र का जन्म हुआ। सिद्धार्थ बेहद संवेदनशील थे। वह श्रमिकों-किसानों के हकों के बारे में चिंतित रहते। शिकार करने से मना कर देते कि व्यर्थ में किसी जानवर की जान लेना अनैतिक है। वह सोचते-आखिर हम प्राणियों के बीच अंतर क्यों करते हैं? कुछ लोगों से हम प्रेम करते हैं और कुछ से शत्रुता। अपने पुत्र के जन्म के बाद सिद्धार्थ के जीवन में एक निर्णायक घटना घटी। उनके पिता ने एक पड़ोसी राज्य पर हमला करने का फैसला किया। सिद्धार्थ ने यह कहकर इसका विरोध किया कि जब पड़ोसी देश की जनता की काई गलती नहीं तो हमला क्यों किया जा रहा है? सिद्धार्थ की बात नहीं मानी गई तो उन्होंने अपने परिवार और राज्यों का त्यागकर वनवास ले लिया। ऋषि-मुनियोंकी संगत और कठिन साधना से उन्होंने मानव जीवन का सार समझने की कोशिश की। आखिर गया में एक बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें तत्वज्ञान की प्राप्ति हुई और वह सिद्धार्थ से बुद्ध हो गए।

बुद्ध ने समाज के पीड़ित और वंचित वर्ग के दु:ख-दर्द दूर करने की कोशिश की। बुद्ध की जीवन यात्रा और संयम व समानता के संदेश ने उन्हें करोड़ों लोगों का मसीहा बना दिया। उनके जितने अनुयायी भारत में है उससे कहीं ज़्यादा विदेशों में। जब डॉ. अम्बेडकर ने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया तो उन्होंने कहा कि मुझे बौद्ध धर्म इसलिए सर्वश्रेष्ठ लगता है क्योंकि यह तीन सिद्धांतों का मिश्रण है। बौद्ध धर्म समझदारी, करुणा और समानता का संदेश देता है। हमारे आज के युवराज गरीबों और दलितों के घर में तो पहुँच जाते हैं, लेकिन उनकी दशा के लिए जिम्मेदार कारणों को समझने या उन्हें दूर करने का प्रयास नहीं करते। महाराष्ट्र की कलावती उन्हें बताती है कि पति के मरने के बाद उसे मुआवज़े का पैसा नहीं मिल पाया। उसके घर में बिजली नहीं है। तेल की कुप्पी ही जलती है। उसे इतनी कम मज़दूरी मिलती है कि वह अपने लड़के को पढ़ा नहीं सकती। महाराष्ट्र में उन्हीं की पार्टी की सरकार है। अगर वह चाहते तो फोन पर मुख्यमंत्री को मुआवज़ा देने को कह सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह सोच में पड़ गए। कई दिनों तक सोचते रहे। फिर अचानक संसद में भाषण देते समय वह कलावती की मुसीबत का हल देश के सामने रख देते हैं - जब भारत-अमेरिका परमाणु करार हो जाएगाा तो भारत के गाँव-गाँव में बिजली आ जाएगी और उस गरीब विधवा की झोपड़ी में उजाला हो जाएगा।

एक दिन वह अंग्रेज़ विदेश मंत्री के साथ अपने चुनाव क्षेत्र के गांव में दलित परिवार के साथ रात बिताने पहुँच जाते हैं। दोनों रात का खाना उस गरीब परिवार के साथ ही खाते हैं। अभावग्रस्त जीवन का स्वाद हर कौर के साथ उनके गले में भी उतरता है। सुबह दोनों बाहर निकलते हैं और इंतज़ार कर रहे पत्रकारों से मुखातिब होते हैं। राजकुमार उस परिवार की गरीबी पर अफसोस और आश्चर्य प्रकट करते हैं। अंग्रेज़ विदेश मंत्री भी कहते हैं कि भारत में गरीबी बहुत बड़ी समस्या है। ऐसा क्यों है, इस बारे में दोनों कुछ नहीं कहते। अगर ईमानदारी से इसके कारणों की पड़ताल करते तो उन्हें अपने पुरखों की नीतियों की आलोचना करनी पड़ती। लोग जानते हैं कि 2500 साल पहले वाले राजकुमार ने सच्चे दिल से काम किया था। उत्पीड़न और असमानता दूर करने के लिए राजमहल और परिवार हमेशा के लिए त्याग दिया था। वह आज भी उपेक्षितों और पीड़ितों के दिलों के राजकुमार हैं। हमारे आज के युवराज के निहितार्थ समाज कल्याण से नहीं, चुनाव कल्याण से जुड़े हैं।

(लेखिका लोकसभा की पूर्व सदस्य हैं)

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 09.04.2009 से साभार

भारत में ईसाइयत और इस्लाम के राजनैतिक उद्देश्य

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

इस्लाम की तरह ईसाइयत भी एक सर्वसत्तात्मक राजनीति से प्रेरित मज़हब है। इन्होंने सदैव विश्व के अन्य धार्मिक विश्वासों, राजनैतिक व्यवस्थाओं और संस्कृतियों को अवमानित, संहार और नष्ट करने का भरसक प्रयास किया है। इसके विपरीत चर्च ने यूरोप में हुए प्रथम और द्वितीय महायुद्धों की सदैव कटु आलोचना की है और चर्च मिलकर यह चाहते हैं कि भावी विश्वयुद्ध यदि हो तो वह एशिया और वरीयता क्रम में भारत में लड़ा जाए।

ईसाइयत के राजनैतिक उद्देश्य

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका में राजनैतिक युद्ध नीति का पुनर्नवीनीकरण किया गया और इस चिंतन में इस तर्क को प्रमुखता दी गई कि किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सीधे युद्ध करने की अपेक्षा अप्रत्यक्ष युद्ध बेहतर होगा तथा अन्य देशों को आर्थिक सहायता देकर, बिना युद्ध किए उनका अनुचित लाभ उठाया जा सके तो यह सीधे युद्ध में धन, सैनिक शक्ति और युद्ध सामग्री के व्यय से कहीं अधिक सस्ता पड़ेगा।

इसी चिंतन के आधार पर वेटिकन (रोमन-कैथोलिक चर्च) और अमेरिका दोनों के माध्यम से चर्च ने पूर्व यू.एस.एस. आर. (रूस) को अस्थिर करना आरंभ किया और इस उद्देश्य की पूर्ति में उन्हें आशातीत सफलता मिली है। अब चर्च का अगला तात्कालिक लक्ष्य भारत को अस्थिर कर, विभाजित व नष्ट करना है और इसके बाद अगला लक्ष्य चीन है।

चर्च भारत को पहले सांस्कृतिक और फिर राजनैतिक दृष्टि से अस्थिर एवं नष्ट करने की सदियों से लगातार कोशिश करता चला आ रहा है। अमेरिकी सी.आई.ए. प्रमुख ने एक बार इस तथ्य को स्वीकारा भी कि उन्होंने ईसाई मिशनरियों का राजनीतिक उद्दश्यों के लिए प्रयोग किया है।

एशिया की ईसाई कान्फ्रैंस (सीसीए) ने अपना सातवाँ अधिवेशन (18 से 28 मई 1981), बंगलोर में आयोजित किया जिसमें प्रचारित 10वें पत्रक - ''भारत में अछूतों का उत्पीड़न एवं हत्याएं और ईसाइयों का उत्तरदायित्व'' (अनु.ले.) में कहा गया है कि ''सारे भारत में अंतरजातीय युद्ध फैल रहा है और हम संयुक्त राष्ट्र संघ और मानव अधिकार आयोग को एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का विचार कर रहे हैं ताकि हम दलितों के लिए एक अलग राज्य-दलितिस्तान की माँग के लिए संघर्ष कर सकें'' (पृ.1) पुनः यह भी कहा गया है कि ''सीसीए स्वयं भी इस गंभीर समस्या के बारे में सोचे तथा यह अपने कार्यक्रम में अछूतों की मुक्ति को सबसे अधिक प्रमुखता दे जो कि आज विश्व की सबसे गंभीर समस्या है जिस पर चर्च को तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।''

इसीप्रकार सीसीए द्वारा कोलम्बो में आयोजित (28 अक्टूबर- 3 नवम्बर 1981) 'धर्म की अछूतों की तरफ से बोलते हुए बंगलोर से प्रकाशित चर्च-प्रेरित 'दलित वॉइस' के संपादक वी.टी.चन्द्रशेखर ने कहा, ''(भारत में) मुसलमान, ईसाई और हिन्दू आपस में लगातार लड़ने वाली कौमें हैं''

चर्च की भांति अमरिका का प्रयास भी यही है कि रूस की तरह भारत को अस्थिर करके विभाजित कर दिया जाए जैसा कि अमरीकी राज्य विभाग द्वारा आयोजित गोष्ठी (16.7.1996) के वक्तव्यों और विस्कोन्सिन विश्वविद्यालय में आयोजित (5-6 नवम्बर 1996) गोष्ठी में व्यक्त विचारों से सुस्पष्ट है। सारे वक्तव्यों का सार यही था कि भारत एक व्यर्थ भौंकने वला दुष्ट कुत्ता है। इसे समाप्त कर दो (ऑर्गेनाइज़र 22.10.96)। शायद अमरीका समझता है कि दुनिया के लोग अमरीका द्वारा रेड इंडियनों के साथ किए गए अमानवीय अत्याचारों को भूल गए हैं या उनकी कुटिल कूटनीतियों से अवगत नहीं हैं?

आज भी भारत में चर्च, समाज कल्याण के नाम पर, अनुसूचित एवं जनजातियों के स्वार्थी नेताओं से मिलकर अनेक पत्र, पत्रिकाओं व प्रचार माध्यमों द्वारा अलगाववादी विष-वमन कर रहा है। निराधार आक्षेपों से भरा 'दलित वॉइस' का साहित्य एक भयंकर अलगाववादी भूमिका निभा रहा है जो असह्य है। सच्चाई तो यह है कि चर्च ने धर्मान्तरण के अलावा दलितों के नाम पर व्यापक सामाजिक विघटनकारी अभियान चला रखा है जो 1947 से पूर्व पराधीनता से भी ज़्यादा भयानक एवं दुष्परिणाम सिद्ध होगा।

चर्च की हिन्दू विरोधी नीतियां सुस्पष्ट हैं जैसे कि ''वर्तमान नीतियों के बारे में हमारा चिंतन भारत में हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा की निन्दा और इसे अस्वीकार करने को प्रेरित करता है।'' राजा बी मनिकम् (Our considerations of the prevailing political ideologies in India lead us to the outright condemnation and rejection of Hindu Nationalism" *Christianity and the Asian Revolution Edited by Rajah B.Manikam, p.96*)

चर्च की नीति, हिन्दू धर्म पर ही नहीं, बल्कि इस्लाम पर भी आक्रमण करने की रही है। क्रिश्चियन लिटरेचर सोसायटी लंदन से प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि ''ईसाइयत की इस्लाम के प्रति नीति होनी चाहिए-आक्रमण, रक्षा नहीं, प्रेमासक्त भावना से आक्रमण, इस्लाम की सच्चाई के प्रति उदारतापूर्वक प्रशंसा, लेकिन फिर भी आक्रमण, पूरी तैयारी के साथ, तीव्र और योजनाबद्ध ढंग से आक्रमण'' (लखनऊ - 1911, जनवरी 23-28, 1911 में आयोजित गोष्ठी से पृष्ठ 10)। "The policy of Christiandom with regard to Islam must be attack, not defence : Attack in all spririt of love and generous appreciation of truth in Islam, but still attack, vigorous concerted and all along the line." (Lucknow 1911, by General Conference of Missions to Muslims held at Luckhnow Jan. 23-28, 1911 p.10, pub. Christian Literature Society for India, London, 1911)

इस्लाम के राजनैतिक उद्देश्य :

इस्लाम की हिन्दू धर्म और भारत के प्रति यही नीति रही है कि किसी प्रकार अधिकांश भारत का इस्लामीकरण करके यहाँ इस्लामी राज्य स्थापित कर दिया जाए, और तब तक सेक्यूलरिज़्म का नारा लगा कर सभी राजनैतिक पार्टियों में घुसकर अपने-अपने ढंग से इस्लामी हितों की रक्षा की जाए जैसा कि स्वयं मुस्लिम नेताओं के कुछ निम्नलिखित उदाहरणों से सुस्पष्ट है :-

1. 1921 में कांग्रेस अध्यक्ष हकीम अजमल खां ने कहा, ''एक ओर भारत और दूसरी ओर एशिया माइनर, भावी इस्लामी संघ रूपी जंजीर के दो छोर की कड़ियां हैं जो धीरे-धीरे किन्तु निश्चय ही बीच के सभी देशों को एक विशाल संघ से जोड़ती हैं। (पुरुषोत्तम, मुस्लिम राजनीतिक चिन्तन और आकांक्षाएं, पृ. 51 से उद्धृत)

2. मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद ने कहा ''भारत जैसे देश को जो एक बार मुसलमानों के शासन में रह चुका है, कभी भी त्यागा नहीं जा सकता और प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है कि **इस पर खोई मुस्लिम सत्ता को फिर से प्राप्त करने के यत्न करे।'' (नंदा-पैन इस्लामिज़्म, इम्पीरियलिज़्म एण्ड नेशनलिज़्म, पृ 119)**

3. मौलाना मौदूदी का कहना है कि ''मुसलमान भी भारत की स्वतंत्रता के उतने ही इच्छुक थे जितने कि दूसरे लोग, किन्तु वह इसको, एक साधन, एक पड़ाव मानते थे ध्येय (मंज़िल) नहीं। उनका ध्येय एक ऐसे राज्य की स्थापना

था जिसमें मुसलमानों को विदेश अथवा अपने ही देश के गैर-मुस्लिमों की प्रजा बन कर न रहना पड़े। शासन दररुल-इस्लाम (शरीय शासन) की कल्पना के जितना भी संभव हो, निकट हो। **मुस्लिम, भारत सरकार में, भारतीय होने के नाते नहीं, मुस्लिम की हैसियत से भागीदार हों। शर्त यह है कि उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा को स्वयं तय करने का अधिकार हो। इस्लामी मज़हबी और सामाजिक नियमों के पालन करने की स्वतंत्रता हो और गैर-इस्लामी (हिन्दू) रीति-रिवाज़ों का उन्मूलन करने की भी। उनसे अपने सहधर्मियों के विरुद्ध युद्ध करने को न कहा जाए।''** (डॉ. ताराचन्द, हिस्ट्री ऑफ दी फ्रीडम मूवमेंट, खंड-3, पृ. 287)।

4. पाकिस्तान बनने के बाद भी मौलान हुसैन अहमद मदनी ने कहा, ''हिन्दुस्तान, जब से इकतदारे इस्लाम (इस्लामी शासन) खत्म हुआ है तब से ही दारुल-हर्ब है।'' ''जब सल्तनत हासिल न हो अहाद (मुसलमानों) का फरीजा सिर्फ यह होगा कि अपनी ताकत के अनुसार जद्दोजहद करें कि इस्लामी हुकूमत कायम हो। (पुरुषोत्तम, पृ. 54 से उद्धृत)।

5. मदनी पुन: कहते हैं, 'यदि वर्तमान में इतनी शक्ति नहीं कि एक सच्चा इस्लामी राज्य स्थापित किया जा सके, तब शरियत के अनुसार दो बुराइयों में से एक छोटी बुराई को स्वीकार करना जरूरी है, क्योंकि जिहाद का कर्तव्य पालन करने में और उसके अनुसरण करने में हथियार या युद्ध की पद्धति का कोई प्रतिबंध नहीं है, बल्कि यह आवश्यक और उचित है कि चाहे जो भी हथियार या पद्धति हो, जो शत्रु की शक्ति या प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा सके, उसका प्रयोग किया जाए। (मुत्ताहिदाह कौमियत और इस्लाम, पृ. 72)

6. इसीप्रकार जमीयत-इ-उलेमा के महामंत्री और भूतपूर्व सांसद् मौ. हिफजुर्रहमान लिखते हैं कि 'सैयद अहमद बरेलवी से लेकर मौ. महमूद ऊलहसन तक के उलेमाओं के **सभी आन्दोलनों का ध्येय भारत में इस्लामी राज्य की स्थापना था और उन्होंने परिस्थितिवश ही गैर-मुसलमानों या कांग्रेस के साथ सहयोग किया था। परन्तु इस सम्मिलित संघर्ष में उन्होंने अपने वास्तविक ध्येय को यथावत् रखा और उसे कभी नज़र अंदाज़ नहीं किया। (मोहम्मद सज्जाद-हकूमत-इ-इलाही की प्रस्तावना से)।**

उपर्युक्त उदाहरणों से इस्लाम एवं भारतीय मुसलमानों के धार्मिक व राजनैतिक नेताओं की मानसिकता सुस्पष्ट होती है कि वे भारत को इस्लामी राज्य बनाना चाहते हैं, भले ही कुछ समय के लिए मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए कांग्रेस व अन्य पार्टियों से समझौता करना पड़े। इसलिए अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनने के बाद दूसरी रणनीति बनाई गई और मुसलमान सभी भारतीय पार्टियों में घुस गए और लगातार भारत के इस्लामीकरण में सक्रिय हो गए हैं और कांग्रेस ने लम्बे काल तक सत्ता में बने रहने के लिए मुसलमानों का अंधाधुंध तुष्टीकरण करना प्रारंभ कर दिया। (देखिए हमारी पुस्तक 'कांग्रेस राज में मुस्लिम तुष्टीकरण और हिन्दू')

एम.आई.जी.-129 बी, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110 027

अब 'लव जिहाद'

केरल में हिन्दू युवतियों को मुस्लिम बनाने का षड्यंत्र तेज

केरल में इन दिनों एक मज़हबी उन्मादी मुस्लिम गुट, जिसका नाम है 'लव जिहाद', हिन्दू युवतियों को अपने 'प्रेम' में फंसा कर उनसे निकाह करके मुस्लिम बनाने का षडयंत्र में लगा हुआ है। पता चला है कि इस संगठन ने इस तरीके से अब तक सैंकड़ों युवतियों को मतांतरित किया है। **'लव जिहाद' में कई कट्टरवादी मुस्लिम गुटों के सदस्य शामिल हैं। पिछले छह माह के दौरान पंचायत के रजिस्टरों से इस तरह के 4000 निकाहों का खुलासा होने पर पुलिस की विशेष शाखा ने जांच आरंभ की है। ऐसे सबसे ज्यादा निकाह मुस्लिम बहुल मलप्पुरम जिले में देखने में आए हैं और उसके बाद कोझीकोड और कासरकोड जिले हैं। दूसरे जिलों में भी इस तरह के निकाहों की खबरें हैं।**

यह गुट युवा मुस्लिम लड़कों का इस्तेमाल करता है। उन्हें हिन्दू लड़कियों को फंसाने की तालीम दी जाती है जिसका खास मकसद उन्हें इस्लाम में मतांतरित करना होता है। निर्देशों के अनुसार, मुस्लिम युवक दो सप्ताह की समय सीमा के अंदर हिन्दू लड़कियों पर अपना जाल फैलाते हैं और अगले छह महीनों के दौरान उनका 'ब्रेन वॉश' करके उनका

मतांतरण और निकाह करते हैं। जो युवतियां इससे इंकार कर देती हैं उन्हें इस जाल से कभी बाहर नहीं निकलने दिया जाता। समझा जाता है कि **उन्हें खास हिदायतें दी गई हैं कि प्रत्येक निकाह से कम से कम चार बच्चे पैदा किए जाएं।** अगर 'लक्ष्य' दो सप्ताह के अंदर झांसे में नहीं फंसता तो उन्हें हिदायत है कि उसे छोड़कर दूसरी लड़की पर निशाना साधें। (X X X X X आगे का भाग छोड़ दिया गया)

'पांचजन्य' (साप्ताहिक) दिल्ली, दिनांक 12.4.2009 से साभार

मुस्लिम रचनाकारों का श्रीराम के प्रति समर्पणभाव

-बद्रीनारायण तिवारी

संसार में इस समय कट्टर धर्मान्धता ने आतंकवाद को पल्लवित किया है। रामकथा को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में मुस्लिम साहित्यकारों का भी योगदान कम नहीं है। संतों, सूफियों, फकीरों और ऋषियों ने ऐसा इतिहास लिखने में अपना जीवन खपा दिया। इसके विपरीत चिन्तन के राजनीतिक दांवपेंच में तथाकथित बुद्धिजीवियों ने देश के आदमी को मानसिक झंझावत में फंसाकर उसे बौना दिया। सुल्तां, शहंशाहों, सम्राटों, राजा-महाराजाओं का इतिहास लिखना ही इतिहास नहीं होता है। इतिहास उसका होता है तो इतिहास पुरुष होता है। इतिहास पुरुष होने के लिए किसी राजगद्दी की आवश्यकता नहीं होती। मुगल शासन में कई तत्कालीन इतिहासकारों ने उनका अतिरंजक वर्णन किया किन्तु महान् कालजयी रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास के 120 वर्षीय जीवनकाल में तीन मुगल बादशाह हुए। तुलसी के नाम की चर्चा तक उनके द्वारा लिखित इतिहास में नहीं मिलती। इसके बावजूद भी तुलसी देश-विदेश के करोड़ों लोगों के कंठहार बन गए।

आधुनिक हिन्दी अर्थात् खड़ी बोली के आदिकवि अमीर खुसरो कट्टर मुसलमान थे। उत्तर प्रदेश के एटा जिले में गोस्वामी तुलसीदास के जन्म से लगभग 250 वर्ष (सन् 1303 ई.) पूर्व इस आदि कवि अमीर खुसरो ने जन्म लिया था। उनका मूलनाम अब्दुल हसन था। अमीर खुसरो को संस्कृत का भी पूर्ण ज्ञान था। भारत की भाषा से ही ही नहीं वरन् अमीर खुसरो यहाँ की संस्कृति से भी पूर्ण रूप से प्रभावित थे। तत्कालीन समय श्री रामनाम का स्मरण एवं गुणगान भारतीय संस्कृति का अंग बनने से खड़ी बोली के आदिकवि खुसरो ने अपनी मुकरियों में राम का उल्लेख करते हुए कहा -

तन मन धन का वह है मालिक।
वाने दिया मेरे गोद में बालक।।
वासे निकसत जी को काम।
ऐ सखी साजन ना सखी राम।।

उस समय 'राम' को बहुभाषाविद अमीर खुसरो हृदयंगम कर चुके थे तभी तो वे कहते हैं -

बखत बे बखत मोय बाकी आस
रात दिना वह रहवत पास।।
मेरे मन को सब करत है काम।
ऐ सखी साजन ना सखी राम।।

हिन्दी का सर्वप्रथम नामकरण 'हिन्दवी' अमीर खुसरो ने ही दिया जो अपभ्रंश होकर 'हिन्दी' नाम से चर्चित हुआ। उन्होंने हिन्दी का संस्कृत तथा फारसी में मिश्रण करके नए-नए प्रयोग भी किए। उसको खुसरो रचित निम्नलिखित फारसी तथा हिन्दी दो सखुना का उत्तर भी 'राम' है -

माशूक रा चे मी वायद कर्द।
हिन्दुओं का रख कौन है ?

अमीर खुसरो तथा तुलसीदास जी के मध्यकाल में कबीरदास जी तथा उनके पुत्र कमाल के समय रामकथा सर्वाधिक लोकप्रिय होने का प्रभाव कबीर की प्रस्तुत पंक्तियां व्यक्त कर रही हैं :-

दसरथ सुत तिहँ लोग बखाना।

राम नाम का मरम है आना।।

इतना ही नहीं निर्गणोपासक कबीरदास स्वयं दूसरों को भी रामनाम उच्चारण की शिक्षा देते हैं :-

कबीर आपणं राम कहि, औरां राम कहाई।

जिहि मुख राम न उबरे, तिहि मुखि फेरि कहाइ।।

कबीर के अनुसार श्रीराम दर्शन के लिए न मस्जिद (मसीत) जाने की जरूरत है, न मंदिर जाने की। वह तो हृदय में ही विराजमान है। बिना प्रेम किए इस राम रसायन को नहीं पिया जा सकता। इसके लिए जीवन का सर्वस्व यहाँ तक कि सिर घड़ का उत्सर्ग करना होगा -

राम रसायन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।

कबिरा जीवन दुर्लभा, मांगे सीस कलाल।।

जिहि घट प्रेम न संचेर, पुनि रसना नहिं राम।

ते नर इस संसार में, उपज गये बेकाम।।

प्रख्यात मुस्लिम संत दरिया साहब (सन् 1664 -1780 ई.) ने रामनाम जपते हुए 116 वर्ष की दीर्घायु पायी थी। उन्होंने नौ वर्ष की आयु में विवाहित होकर 15 वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया था। उन्होंने किसी विद्यालय में शिक्षा नहीं ग्रहण की, किन्तु उनकी रचनाओं में उच्चकोटि के दार्शनिक चिंतन की झलक मिलती है। उनकी दृष्टि में प्रकृति का ज्ञान या बाहरी वस्तु पर अनेक शास्त्र भरे पड़े हैं। किन्तु ये सभी शास्त्र रामतत्त्व के बिना उसी प्रकार फीके हैं, जिस प्रकार नमक बिना श्रेष्ठतम व्यंजन। शास्त्र तो दीपक मात्र हैं। भयंकर अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने हेतु सूर्य का प्रकाश आवश्यक है। संत कवि दरिया साहब की रेखांकित पंक्तियों में इसका सार प्रस्तुत है।

राम बिना फीका लगे, किरिया सास्तर ग्यान।

दरिया दीपक कह रहे, उदय तथा दिनमान।।

इस मुसलमान संत दरिया साहब का राम जप अति विचित्र था। अपने को उस प्रत्येक हिन्दू-मुसलमान, बाल-वृद्ध, संन्यासी-गृहस्थ का दासानुदास मानते थे, जिसका जीवन राम मय रामभक्त हो -

जो कोई साधू गृही में, राम माहि भरपूर।

दरिया कह उस दास के, मैं चरनन की धूर।

सकल कवित का अर्थ है, सकल बात की बात।

दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात।।

समकालीन अधिकांश रचनाकार नारी निन्दा कर रहे थे, किन्तु दरिया साहब ने इसका भरपूर खण्डन करते हुए ऐसे पुरुषों की निन्दा की जो इसके अधिकारी नहीं है। नारी तो जगत जननी है, पालक और पोषक -

नारी जननी जगत की, पाल पोस दे कवि।

मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।

श्रीराम नाम पर विश्वास और सेवकों पर इतनी श्रद्धा एक अन्य मुस्लिम संत भक्त की रचनाओं में बिखरी हुई है। इस संत का नाम रज्जब अली खाँ था। यह पठान मुसलमान था। वह सुप्रसिद्ध मुस्लिम संत दादू दयाल के प्रमुख शिष्य और संत सुंदरदास इन्हीं के गुरु भाई थे। राम माहात्म्य पर इनके लिखे दोहे हिन्दू-मुस्लिम संत परम्परा में बेजोड़ माने जाते हैं -

वाहिर कहिए कौन सों, मोहे मुश्किल काम।

अंतर अंतर भेटिये, अंतरजामी राम।।

अब के जीते जीत है, अबके हारे हारे।

जो रज्जब रामहिमजो, अल्प आयु दिन चार।।

राम रसायन पीजिए, पीये सब सुख होई।

पीवत ही पातक हरै, सब संतन दिस जाई।।

अंतिम दोहे में जिस रसायन की चर्चा है वह राम प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। रज्जब जब रामभाव में मस्त होकर गाते तो सभी लोग मस्त हो जाते थे। रज्जब के जीवन की एक रोमांचकारी घटना उनके विवाह संबंधित है। जब वे

शादी के लिए गए तो उनकी बारात एक ऐसे स्थान पर ठहरी जहाँ उनके गुरु संत दादू दयाल समाधिस्थ थे। समाधि खुलते ही दादू की सर्वप्रथम दृष्टि दूल्हे पर पड़ी। उसी क्षण दूल्हे के मन में आया कि वह संत हो जाए और वे संत हो गए। इसलिए रज्जब सदैव जीवन पर्यंत दूल्हे की वेशभूषा में ही रहे। उनकी इसी मस्ती का एक पद अवलोकन करें :-

राम रंगीले के रंग राती। परम पुरुष
संग प्राण हमारे।
मदन गलित मदमाती। लाग्यो नेह राम रिमल सूं
गिनत न सीली ताती। डगमग नाहिं
अडिग हुइ बैठी,
सिर घर करवत करती। सब विधि
सुखी राम ज्यूँ राखै,
यहु रसरति सुहाती, जन रज्जब धन
ध्यान तिहारौ, बेर बेर बलि जाती।

उदारमना मुसलमानों के लिए भी श्रीराम प्रेरणा के बिन्दु रहे हैं। दक्षिण हिन्दी के सूफी शायद शाह तुराव है जिन्होंने 'ग्यान सरूप', 'मुसनवी महजबीओ - मुल्ला' की रचनाएं की। कवि तुराव साहब ने अपने ग्रंथ 'मन समझावन' में लिखा है कि जब आकाश-पाताल, सूर्य-चन्द्रादि, ब्रह्माण्ड, प्रपंच नहीं था। तब भी उनके गुरुजी ने एक तत्त्व का अस्तित्व 'राम' कहा है। तुराव साहब ने इसके विषय में लिखा है -

न आकाश का तेज। न पिरथवी-ताल। न विरसपत न मंगल।
न शंकर शशि बुध। न वायु न बादल। न पाताल नोखंड।
न डोगरा जल। गुरु जी कहा रामजी। का अर्थ तब।
न था कुछ या । ब्रमान परपंच अब।

दक्षिण भारत के हिन्दी सूफी संत कवि को इस रचना में 'राम' को किस आध्यात्मिक दृष्टि से देखा उल्लेखनीय है। उस आदि तत्त्व को जो सर्वत्र विराजमान हैं, उसे राम-रहीम, ईश्वर-अल्लाह आदि कोई भी नाम से पुकारा जा सकता है। इस तत्त्व को एक देश, एक नगर में किसी एक दिशा, मंदिर-मस्जिद आदि एक स्थान पर नहीं पाया जा सकता। इसे सूफी संत शायद तुराव की प्रस्तुत पंक्यिां कितने स्पष्ट शब्दों में 'राम' का निवास व्यक्त कर रही हैं :-

पूरब दिशा हरी का वासा, पश्चिम अलह मुकामा ?
दिल ही खोजि दिलै दिल भीतर, इह राम राम रहिमाना।
जौरे खुदाई राम निवासा, ढुहु में कितहु न हेरा।
तीरथ मूरर्ति राम निवासा, ढुहू में कितहु न हेरा।

अनेक मुस्लिम रचनाकार हैं जिन्होंने सीताराम और रामकथा के विभिन्न पात्रों पर आंतरिक विषयों पर अत्यंत विवेचनापूर्वक रचनाएं लिखी हैं। इसीलिए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने अब्दुर्रहीम खनखाना जो 'रहीम' या 'रहिमन' नाम से अति विख्यात हैं, के संबंध में ठीक ही कहा है -

''अपने धर्म और आध्यात्मिक विश्वास पर सुदृढ़ रहकर भी मुसलमान कितना अधिक भारतीय हो सकता है, रहीम इसके जाज्वल्यमान प्रमाण हैं।''

उन्होंने अपनी कविता में भवसागर को पार करने के लिए राम की शरण में जाना ही कल्याणप्रद है, राम ही नौका है, और कोई उपाय नहीं है जो राम नाम का स्मरण नहीं करता उसका जीवन व्यर्थ है -

राम नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपादि
कह 'रहीम' तिहिं आपुनो, जनम गंवायों बादि,
गहु सरनागत राम कै, भवसागर के नाम
रहिमन जगत उधार कर, और न कछु उपाय

रहिमत धोखे भाव से, मुख ते निकसत राम

पावन पूरन परम गति, कामादिक के धाम

वस्तुत: मनुष्य का दुखदर्द सुनकर लोक हँसी उड़ाते हैं, उसे कम कोई नहीं करता। मांगने वाले को सुख-शांति प्रदान करने वाला दाशरथि राम ही है, वही सभी का दुखदर्द हरने वाला है।

दुख नर सुनि हासी करै, नाहिं धरावत धीर

कही सुनै, सुनै दुख हरै, रहिमन वे रघुवीर

रहीम की श्रीराम पर कितनी अगाध श्रद्धा थी इस आस्था को इन दोहों मे कितने प्रकार से स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है -

भजु मन राम सियापति रघुपति ईश

दीनबंधु दुख टारन कोशलाधीश

रहिमन भावी बहु प्रबल होत आपने हाथ

राम न जाते हरिण संग सीय न रावण साथ

बनवासी राम अपने 14 वर्षीय वनवास में लगभग 12 वर्ष जिस 'चित्रकूट' चिन्ताहरण नगरी में रहे। रहीम भी अपने दुर्दिनों में घनिष्टतम मित्र संत तुलसीदास के पास चित्रकूट प्रवास करते हुए उनकी रामकथा भी सुनते रहे। इस समय भी चित्रकूट जाने पर सभी मंदिरों तथा वहाँ के निवासियों से रहीम की ये पंक्तियाँ गुँजायमान होती रही हैं :-

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेश

जा पर विपदा परित है, सो आवत यहि देश

.... हिन्दुआन को वेद सम, तुरुकहिं प्रगट कुरआन

इसी परंपरा को वर्तमान मुस्लिम कवियों ने भी जारी रखा। उदाहरणार्थ लखनऊ के कविवर मिर्जा हसन नासिर ने श्रीराम विषयक कई काव्य कृतियाँ लिखी हैं। ऐसे सशक्त मुस्लिम हस्ताक्षर मिर्जा हसन नासिर की बानगी स्वरूप रामकाव्य की रेखांकित भावपूर्ण पंक्तियों से अवगत हो सकेंगे :-

कंज-वदनं दिव्य नयनं मेघ-वर्ण सुन्दरं।

दैत्य-दमनं पाप-शमन सिन्धु-तरणं ईश्वरम्।।

गीध-मोक्षं शीलवन्तं देव-रत्नं शंकरं।

कोशलेश शान्तवेशं नासिरेश सिय-वरम्।।

इसी प्रकार कट्टरता से दूर उदारमना मुस्लिम कवियों ने बड़ी संख्या में स्फुट रचनायें भक्तवत्सल श्रीराम के प्रति समर्पण भाव में लिखी हैं। वर्तमान समय में इन भक्तिपूर्ण रचनाओं से देश में सद्भावना का संचार होगा। भारतेन्दु हरीशचन्द्र की वे पंक्तियां बरबस याद आ रही हैं - ''मुसलमान हरिजनन् पर कोटिक हिन्दूवारिए'' अंतत: अमीर खुसरो की इन पंक्तियों की चर्चा बिना अपूर्णता रहेगी -'

राम-ह-मन हरगिज न शुद

हरचन्द गुफतम राम-राम।।

अयोध्या संवाद, (दि. 2.4.2009 से 8.4.2009 तक)

कारसेवक पुरम्, अयोध्या के सौजन्य से

श्रद्धांजली

महाप्राण श्री विष्णु प्रभाकर जी का महाप्रयाण

11 अप्रैल 2009 वह दिन था जिस दिन विष्णु प्रभाकर जी ने इस जगत् से सदा के लिए विदा ले ली। विष्णु प्रभाकर हिन्दी जगत् के एक पुरोधा साहित्यकार थे जिन्होंने जीवन को और समाज को जैसा जिया वैसा ही अपनी लेखनी से ढाल दिया। उनकी कृतियों में आज के भारतीय समाज की समस्याएं ही नहीं बल्कि उनका समाधान भी मिलता है। इसीलिए उन्हें आधुनिक भारतीय समाज का दर्पण कहा जाता है। लगभग सभी साहित्यिक विधाओं में उनकी अनेक कालजयी कृतियां आज उपलब्ध हैं। शरद्चन्द्र चट्टोपाध्याय पर उनकी 'आवारा मसीहा' तो आज उनका पर्याय ही बन गई है। इस कृति के लेखन के लिए वे उन सभी जगहों पर गए; जिनसे शरद्चन्द्र जी का संबंध था। वे किसी वाद से नहीं जुड़े थे। "गांधी जी की विचारधारा में उनकी आस्था तो थी किन्तु वे कांग्रेसी नहीं थे। इसी प्रकार आर्य समाज में वे आस्था रखते थे किन्तु वे आर्यसमाजी नहीं थे ... " ये शब्द हैं उनके जीवन को निकट से पढ़ने वाले साहित्यकार श्री हिमांशु जोशी के। महाप्राण विष्णु प्रभाकर जी आज इस संसार में नहीं हैं लेकिन संसार से जाते समय उन्होंने अपने पार्थिव शरीर को भी मानव कल्याण के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र नई दिल्ली को दान कर दिया जिससे वे लोगों को मृत्यु के बाद भी जीने की प्रेरणा दे गए और इसी प्रकार उनकी साहित्यिक कृतियां भी उन्हें सदियों तक जीवित रखेंगी तथा प्रेरणा स्रोत भी बनी रहेंगी।

विष्णु प्रभाकर को **गौरवघोष** परिवार भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महात्मा रामचन्द्र वीर जी महाराज का देहावसान

आचार्य धर्मेन्द्र जी महाराज के पूज्य पिताजी महात्मा रामचन्द्र वीर जी महाराज का उनके निवास विराटनगर, अलवर (राजस्थान) में 24 अप्रैल 2009 को बैकुण्ठवास हो गया। इस वर्ष उनकी जन्मशती मनाई जा रही थी।

महात्मा रामचन्द्र वीर जी अपनी आयु के 18 वर्ष से ही गोहत्या रोकने, पशुरक्षा करने और भारत को अखण्ड करने के लिए संघर्ष करने लगे थे। कोलकाता में माँ दुर्गा के कालीबाड़ी स्थित प्रसिद्ध मंदिर में परंपरागत पशुबलि उन्हीं के प्रबल संघर्ष के पश्चात् बन्द हो पाई। देश के लगभग 1100 मंदिरों में उनके प्रयत्नों से पशुबलि बन्द हुई। वर्ष 1966-67 ईसवी में लगातार 166 दिनों का अनशन उन्होंने गोहत्या बन्दी के लिए किया था। उनके प्रयत्नों से अनेक राज्यों में गोहत्या बन्दी के कानून बने। **अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने का अनूठा तरीका निकालते हुए उन्होंने चाय का विरोध किया। चाय बागान का विरोध किया और चाय बागानों में काम करने वाले मज़दूरों को वैकल्पिक रोज़गार की ओर प्रेरित किया।** वे शंख बजाने में पारंगत थे। 82 वर्ष से उन्होंने अन्न व नमक का त्याग कर रखा था। **नोबल पुरस्कार विजेता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने उनकी प्रशस्ति में काव्यरचना की थी।**

ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

पाठक विचार सरणि

1. दिल्ली के एक दैनिक अंग्रेज़ी समाचार पत्र 'पॉयनियर' में पिछले दिनों एक अमेरिकी विद्वान् पत्रकार श्री रिचर्ड बैंकिन का दिल दहला देने वाला एक लेख छपा। श्री रिचर्ड बंगलोदश से हिन्दुओं को बाहर निकाल फेंकने (Ethnic Cleansing) की प्रक्रिया को लेखबद्ध करना चाहते थे। वे लिखते हैं कि 'न केवल बंगलादेश बल्कि भारत के पश्चिमी बंगाल राज्य में भी हिन्दुओं पर आक्रमण हो रहे हैं। भारत की बंगलादेश से लगी विस्तृत सीमा को सरलता से लांघकर आंतकवादी हथियारों और दूसरे सामान की तस्करी करते हुए भारत में प्रवेश करते हैं जिसमें उन्हें कई बार भारत के सुरक्षा बलों से भी सहायता मिल जाती है, परन्तु मैंने जो एक और बात देखी वह यह है कि हिन्दुओं का अब पाकिस्तान से पूर्ण सफाया किया जा रहा है। पहले कभी पाकिस्तान में हिन्दू 20 प्रतिशत के लगभग होते थे किन्तु अब मात्र 1 प्रतिशत रह गए हैं। जब से तालिबान ने स्वात घाटी पर अधिकार किया है पाकिस्तान से हिन्दुओं के समूह के समूह पंजाब में शरणागत हो रहे हैं। हिन्दू शरणार्थी अपने पर होने वाले आक्रमणों और धमकियों की दुख भरी कहानियां सुनाते हैं। **श्री रिचर्ड बैंकिन लिखते हैं कि सबसे अधिक शर्मनाक बात तो यह है कि इन हिन्दुओं के लिए स्वयं भारत सरकार भी कुछ नहीं कर रही जबकि हिन्दू होने के कारण ही तालिबानियों के द्वारा इन हिन्दुओं का पूर्ण विनाश किया जा रहा है।**

भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दुओं की दुर्दशा पर न तो कोई मीडिया, न कोई मानवाधिकार संगठन (एन.जी.ओ.) यहाँ तक संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) ने भी कभी इसके विरोध में आवाज़ नहीं उठाई। स्वात घाटी में शरीयत लागू करने के तालिबान और पाकिस्तान सरकार के मध्य हुए समझौते में राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा तालिबानियों के नरम वर्ग में भविष्य में ओर भी अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं।''

श्री रिचर्ड बैंकिन यहूदी हैं। भारत में इसलामी उग्रवाद से त्रस्त जनता और पाकिस्तान तथा बंगलादेश में हो रहे हिन्दुओं के नरसंहार की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। किन्तु भारत सरकार की ही इस ओर बेरुखी उन्हें सबसे अधिक सताती है क्योंकि हिन्दुओं के कारण ही तो भारत 'भारत' है। जहाँ-जहाँ हिन्दू कम संख्या में हो गए वह भाग भारत से कट गया। यदि हिन्दू स्वयं ही हिन्दुओं का विनाश चुपचाप देखते रहेंगे तो बाहर वाले कैसे उन्हें बचा सकते हैं।

2. फ्रांस के वरिष्ठ पत्रकार श्री फ्रांस्वा गोएतिए कई वर्षों से भारत में रह रहे हैं। पिछले महीने अपने एक लेख में उन्होंने कहा कि ''मेरे चाचा एक पादरी थे। मेरी शिक्षा एक कैथोलिक रिहायशी स्कूल में हुई। मैं भी ईसाई प्रचारक बनकर एशिया के पेगन (गैर ईसाई) लोगों को ईसाई बनाने का कार्य करना चाहता था। ईसाई पादरियों के द्वारा हमें यही पढ़ाया जाता था कि हिन्दू झूठे देवताओं को पूजते हैं अत: उन्हें जेसस क्राइस्ट के सच्चे उपदेशों वाले ईसाई संप्रदाय में लाने की आवश्यकता है।''

''किन्तु जब मैं भारत आया तो मैंने पाया कि हिन्दू तो ईश्वर को ही विभिन्न रूपों में पूजते हैं। उनके अवतारों का दर्शन मुझे अच्छा लगा और ये हिन्दू ही तो थे जिन्होंने दुनिया भर के प्रताड़ित अल्पसंख्यकों को शरण दी जैसे पारसी, यहूदी जिन्हें संसार के अनेक देशों में अत्याचार सहने पड़े। सीरियन ईसाई भी भारत में शरणागत हुए और तिब्बतियों को भी यहां शरण मिली।

वाराणसी, बंगलूरू, मुम्बई इत्यादि अनेक स्थानों पर बार-बार हुए विस्फोटों में सैंकड़ों हिन्दू मारे गए। फिर भी न तो श्री मनमोहन सिंह और न ही श्रीमती सोनिया गांधी ने कभी इस्लामिक आतंकवाद की बात कही। इसी प्रकार उड़ीसा में जब लगातार हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया जाता रहा और उनके हिन्दू धर्म का ही मज़ाक उड़ाया जाता यहां तक कि 84 वर्षीय स्वामी लक्ष्मणानन्द तथा साध्वी माताजी की जघन्य हत्या कर दी गई और हिन्दू देवताओं के विरुद्ध गंदे शब्दों का प्रयोग किया गया तो वहां के हिन्दुओं को क्रोध आ गया। उन्होंने अपना क्रोध चर्चों पर निकाला जो कि अधिकतर झोपड़े में ही थे फिर भी भारत सरकार द्वारा सोफ्ट टार्गेट बने हिन्दुओं को ही दबाया गया।''

'न तो भारतीय मीडिया, न ही विदेशी पत्रकारों ने कभी इस बात को सोचा कि कर्णाटक के हिन्दुओं में इतना रोष क्यों है। **वास्तव में वहाँ यूरोप के मिशनरियों की सहायता से चलने वाली 'न्यू लाइफ' ईसाई संस्था ने मंगलौर और उसके**

आसपास के क्षेत्रों के हिन्दुओं को अनेक प्रलोभनों द्वारा बड़ी संख्या में धर्मान्तरित करना आरंभ कर दिया। परन्तु हद तो तब हो गई जब 'न्यू लाइफ' ने सत्यदर्शीनी नाम की एक पुस्तक छपवा कर वहाँ के लोगों में बड़े पैमाने पर वितरित की जिसमें हिन्दू देवी-देवताओं के लिए बहुत गंदे शब्दों का प्रयोग किया गया था जैसे :-

'भगवान् विष्णु की पुत्री उर्वशी एक वेश्या है और वशिष्ठ इसी वेश्या के पुत्र हैं जिसने अपनी मां से ही विवाह रचा लिया और वही ऐसा गन्दा व्यक्ति हिन्दुओं के भगवान राम का गुरू है।''

'जब कृष्ण स्वयं ही नारकीय अंधकार में डूबा हुआ है तो वह दूसरों का क्या प्रकाश दे सकता है और स्वयं ब्रह्मा ने ही सीता का अपहरण किया था।''

'जब ब्रह्मा, विष्णु, और शिव स्वयं विलासी और भोगी हैं तो उनको भगवान मानना भी पाप है। इस प्रकार की कुछ और बातें भी इस पुस्तक में कही गई हैं।''

'किन्तु केन्द्र सरकार के दबाव में कर्णाटक के मुख्यमंत्री को हिन्दू संगठनों पर कार्यवाही करने के लिए विवश होना पड़ा। वास्तव में इन सारी परिस्थितियों का दोष हिन्दू समाज पर ही है जबकि उनके पास बुद्धिबल है, धन बल भी है फिर भी उनके बुद्धिजीवी वर्ग आत्मग्लानी और भय से ग्रस्त हैं या अवसरवादी हैं। हिन्दुओं में एक बड़ा वर्ग उदासीन और निष्क्रिय है या अपने स्वार्थ में डूबा हुआ है। जबकि हिन्दू एक महान् सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ज्ञान की धरोहर के उत्तराधिकारी हैं।''

फ्रांस के इस मानवतावादी, विचारशील विद्वान् श्री फ्रांस्वा गोएतिए के हृदय से निकले इन उद्गारों पर क्या भारतवासी ध्यान देंगे ?

डॉ. कैलाश चन्द्र
333, सुनहरी बाग अपार्टमेंट्स, सेक्टर-13,
रोहिणी, नई दिल्ली

Distressing is the enveloping night’

-Murtaza Razvi

The year was 1985, Pakistan’s darkest period under the General Zia dictatorship. The regime only reluctantly allowed the celebration of the dissident poet Faiz Ahmad Faiz’s birthday the year after he died, virtually banished from public life. An unspoken ban remained on his poetry on state TV and radio. The organisers had chosen the Lahore Arts Council’s Alhamra auditorium (a sarkari venue) on The Mall, neighbouring the Governor House, and Iqbal Bano was to sing Faiz.

Not only was Faiz banned by the quasi-Islamic regime,but also the wearing of saree at public venues. The mild-mannered Bano came draped in a silk saree, a perfect picture of her Dehli gharana style, but that day she roared like a lioness as Lahore swung along. The crowd was so huge the organisers had to throw the auditorium doors open, asking the youngsters to sit on the floor and vacate the seats for the elderly, who also came in droves. Then, loudspeakers had to be put up outside the hall, along The Mall, because the crowd outside just would not leave without hearing Bano sing Faiz.

A nearly hour-long recital of the otherwise short but poignant poem, *Ham dekhain ge* (‘we shall see the promised day of deliverance’) followed. The thumping and swinging by the huge crowd was so dramatic, a revolution seemed imminent. Zia’s riot police watched in a state of shock, and then disappeared from the scene. Any gathering of more than four persons in the street, and certainly all merrymaking, were outlawed. But here were thousands crying out loud and ecstatically dancing with joy. Bano rocked Lahore that day, resurrecting Faiz who suddenly seemed to have risen from the grave to lead his people to deliverance from tyranny.

Her deep-throated, controlled and trained voice commanded respect and awe in equal measure. When she took to the stage, the world came to a halt. Over the years, as classical music died an unsung death in Pakistan, Bano had moved over from the singing of pure ragas to semi-classical khayal, thumri, dadra, geet, ghazal and nazm. If Noorjehan was gifted with *Mujh se pehli si mohabbat* by Faiz, the poet also gave away his equally haunting *Dasht-e-Tanhai nazm* to Bano. He would not

recite these poems himself, and whenever pressed, would say these were not his anymore. They belonged to Noorjehan and Iqbal Bano; only they could recite them.

Moving to Pakistan from Delhi in 1952, Bano brought with her the graces and sophistication of the high Muslim elite culture exemplified by the Delhi and Lucknow of yore. Her coy but graceful style epitomised the romance inherent in *Poorbi geets and thumris*, composed to riveting tunes harped by a minimalist orchestra that comprised of no more than a harmonium, with a steady beat of tabla or an occasional flute for accompaniment. Bano, when she crooned, would eat up the music; little was needed for she had a jaltarang of her own going. Diverse classical and custom-written Poorbi numbers like *Moray saiyyan utrain ge paar (1953), and Payal mein geet hain chham chham ke* (1959) remain classics, as do many Bano ghazals by Faiz, Nasir Kazmi and Faraz among the contemporaries, and Ghalib, Daagh and Hafiz, among the classical Urdu/Persian poets.

She was equally known for singing Persian ghazals, and performed regularly at the Jashn-e-Kabul festival, an annual high-profile event in imperial Afghanistan until the early 1970s. Her Persian renditions include the classical *Ma ra be-gham ze kusht*..

Upon migration to Pakistan, Bano, at 17, married a conservative zamindar who, however, fostered her talent urging her never to give up singing. She also lent her voice to several Pakistani films as a playback singer, mostly in the 1950s. After her husband passed away in 1981, she moved to Lahore from her farmhouse near Multan, to live with her two sons and a daughter. In 1974, she was awarded the President's Pride of Performance.

As a master of the genre, she is now survived only by Mehdi Hasan, who is critically ill, and the still very charming Farida Khanum. No living artist today comes even near the benchmarks set by these ghazal maestros, along with the late Begum Akhtar and Ustad Amanat Ali Khan. And in Pakistan, a land under the shadow of encroaching Talibanisation, Bano's classic number from the 1950s, *Parishaan raat saari hai, sitaro tum to so jao* ('distressing is the enveloping night, stars you go to sleep') is all the more haunting - as yet another bright star goes out.

Courtsy: The Indian Express, New Delhi 23,April 2009

Bhagwat, a unifier within Sangh family

Mohan Madhukar Bhagwat, a 58-year-old veterinary doctor, is one of the youngest to head the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS). A near look-alike of Sangh founder K B Hedgewar. A favourite story of the new RSS chief is about a miner who dug long for gold but sold his stake when he was within a few feet of a strike. Staying the course and a no-risk attitude may well mark his tenure as he is likely push for what he has often described as Hindu consolidation.

Bringing back a sense of equilibrium within BJP and in the Sangh parivar's functioning are expected to top his priorities. The sixth Sarsanghchalak comes from a family of RSS activists. His father Madhukar Bhagwat, known to have initiated L K Advani into the RSS fold, was the president of its Chandrapur zone and worked as Prant Pracharak of Gujarat. One of the new RSS chief's brothers is the chief of RSS's Chandrapur city unit. Bhagwat is seen as an unifier within the Sangh Parivar. Bhagwat was born on September 11, 1950, in Chandrapur in Vidarbha. Eldest of three brothers and a sister, Bhagwat did his schooling from Lokmanya Tilak Vidyalaya and then his first year BSc from Janata College, both in Chandrapur.

He got admission to the Veterinary College in Nagpur. Already, deeply committed to RSS ideology, Bhagwat decided to turn a fulltime RSS activist when he was in the final year of MVSc. He became a Pracharak towards the end of 1975 when Indira Gandhi declared the Emergency.

After working underground during that period, he was given responsibility of the Akola prant in 1977 and subsequently become Pracharak of Nagpur and Vidarbha region. In 1987, he was elevated as all India deputy in-charge of RSS's physical exercises wing.

In 1999, he was made in-charge of pracharaks for one year. Bhagwat is believed to be of the view that RSS should not dabble in party politics.

In 1948	**When Mahatma Gandhi was assassinated, RSS was banned for alleged complicity and its leaders were jailed.**
In 1952	**began a cow protection movement demanding ban on cow slaughter. In 1963, an RSS contingent participated in the R-day parade**
In 1973,	**Balasaheb Deoras became its chief. In 1975, during Emergency, RSS was banned again**
In 1981,	**RSS launched a major movement in meenakshipuram to protest the mass conversion of Hindus to Islam**
In 1990,	**supported karsewa at Ayodhya. In 1992, Deoras's younger brother Bhaurao Passes away. Deoras Sr hands over charge to Rajendra Singh in 1994**
In 2000,	**Sudarshan takes over after Rajendra Singh Rajju Bhaiyya hands over the reins**

Ties with BJP new RSS chief's priority

Mohan Bhagwat takes charge when BJP has moving from crisis to crisis. Known to have a low-profile style, which is typical of the organisation, he has a good rapport with senior BJP leaders. Yet, he may find himself cast in the difficult role of having to sort out the feuds among BJP's "gennext" which have only intensified over the past months.

BJP insiders point out presiding over a change in leadership may well be his biggest challenge as no first amongst equals had emerged since the sun set on the Atal Bihari Vajpayee era. Though Advani is clearly the tallest leader, the need for a successor cannot be put off for too long. If the NDA does not do well in the elections, the decision may have to be taken even earlier than anticipated. With Bhagwat being elevated as RSS chief, Suresh Joshi has been named as general secretary. Though his interaction with BJP leaders will be quite important as Bhagwat, Joshi aka Bhaiyya Joshi is a relative unknown figure in the BJP circles.

The other members of the presidium which will guide the Parivar affairs are Madandas Devi, Suresh Soni and Dattarey Hosbale. As far as BJP is concerned, the core team that has handled interaction with the party leadership remains Bhagwat, Devi and Soni. It was Bhagwat who had made Advani's ascendancy clear in a meeting with BJP leaders when he said that the veteran would have the last say in organisational matters.

Bhagwat, insiders say, is likely to push for the BJP to be more sensitive to "Sangh ethos". But how far will he succeed is not clear, as RSS's leverage with the party has diminished.

The transition took place on the second day of the ongoing Akhil Bharatiya Pratinidhi Sabha, at the Smruti Mandir premises, being attended by over 1,300 representatives of the Sangh Parivar.

With RSS chief KS Sudarshan's decision to retire and make way for his 58-year-old second-in-command Mohan Rao Bhagwat, an era has come to an end in Sangh Parivar. For long, the RSS and its arms were feeling the requirement of a "younger and active" head who would be more "involved" with affairs of the outfit. More so, because Sudharshan had been ailing and Bhawgat, for all practical purposes, was dealing with the BJP and other RSS affiliates, directly or through his men.

Bhagwat not only enjoys the reputation of being "neutral" to all groups within the Parivar (while having a pragmatic approach on contemporary issues) but is also considered a "hard taskmaster" who never "gives up" on ideological issues. Also, with Bhagwat at the helm, NDA's prime ministerial candidate L K Advani would be a happy man. Under Sudarshan the BJP-RSS relationship had gone through many troubled phases, the most troublesome time being the stand-off between Advani and the Sangh over the former's "secular" remarks on Mohammad Ali Jinnah. **Bhagwat is believed to have played a key-role in the subsequent patch-up between Advani and the Sangh leadership and bringing in the RSS' support to get Advani the party's prime ministerial candidature.**

Advani had worked under Bhagwat's father in Gujarat as an RSS pracharak.

Now with Bhagwat taking the RSS reins, ahead of the General Election, it is widely expected that both outfits would sing the same tune and Advani will have a better say in the RSS. In another development, Suresh Rao Joshi, one of the three joint general secretaries who had largely concentrated on strengthening the RSS affiliates (other than BJP), would replace Bhagwat as general secretary of the outfit.

Courtsy: The Pioneer, New Delhi, March 22, 2009

Deciphering Indus script a tough task

Do symbols on the Indus Valley seals and other objects qualify as a script?

The argument of Farmer — and others who hold the view that the Indus valley figures are merely a non-structured symbol system and do not represent a full language, rests to a large extent on the non-existence of long texts. He has argued that despite the fact that the Indus symbols have been known for at least 700 years, with inscriptions found on thousands of objects, the longest Indus text on a single surface is 17 signs long, and the average is under 4.6 signs, which is typical of many other non-linguistic symbol systems.

Apart from that, repetition of similar figures are rare. Also, unlike other ancient civilizations that wrote routinely on perishable material, Indus civilization has no such known records.

What are the arguments against Farmer's hypothesis?

Finnish scholar Asko Parpola, who is considered one of the leading experts on the Indus script doesn't agree with Farmer. The non-availability of long texts, he argues, could be explained by the fact that most of the information about the civilization comes from only 10% excavation of a single city. Hence there is a lot still to be explored.

Besides, the Chinese writing system also has a very large number of signs rarely used in newspapers and hence the argument about repetition of characters doesn't seem that strong. According to Parpola, the longer texts may have been written on birch bark, palm leaves, parchment, wood, or cotton cloth, which would have perished in course of time. He further argues that the civilization was famous for cotton cultivation, but apart from a few microscopic fibers nothing has survived. Hence, non-availability doesn't imply non-existence, he points out.

He is also known for his theory that the script encodes a Dravidian language, a theory supported by Iravatham Mahadevan, who is also a specialist on the Indus script and early Tamil epigraphy. Recently, a team that included mathematicians, has used mathematical techniques to conclude that the Indus symbols are indeed a script.

If it is a script, why hasn't it been deciphered?

Most successful decipherments of ancient scripts were possible because of the availability of translations in an already known script. Historical information is also important in identifying the meanings of symbols. The Bible and Greek historians, for instance, were sources of historical information that helped in deciphering the Persian cuneiform script. In the case of the Indus Valley, the script was forgotten long before the earliest preserved literary records of the region were composed, and hence, the later Indian sources tell us nothing about the civilization.

How was the ancient Egyptian script deciphered?

The ancient Egyptian script was hieroglyphic, that is its characters were made by graphical figures. Early attempts at decipherment failed because of the assignment of emotional meanings to the actual symbols. For instance, people believed that the hieroglyph for son was a goose or geese. In reality, goose was chosen for the phonetics as the word for goose once had the same sound as the word for son.

The Egyptian script could only be deciphered after the discovery of the Ptolemaic era Rosetta Stone, which was a decree by Ptolemy V, describing the repealing of various taxes and instructions to erect statues in temples. The stone had three translations of a single passage — two in ancient Egyptian language scripts and one in classical Greek.

Courtsy: ToI, New Delhi, April 27, 2009

List of Govt schemes, projects named after Nehru-Gandhis

Following is the list of Government schemes and projects; universities and educational institutions; ports and airports; National parks and sanctuaries; sports tournaments, trophies and stadia; hospitals and medical institutions; national scientific and research institutions; University chairs, scholarships and fellowships; festivals; roads and buildings named after three members of the Nehru Gandhi family, Rajiv Gandhi, Indira Gandhi and Jawaharlal Nehru, which has been submitted to the Election Commission by A.Surya Prakash as an Annexure to his complaint. This list includes most of the projects, schemes and institutions funded by the Union Government and the Governments in the States.

1 Rajiv Gandhi Grameen Vidyutikaran Yojana;
2 Rajiv Gandhi National Drinking Water Missio;
3 Rajiv Gandhi National Crèche Scheme for the Children of Working Mothers, Department of Women & Child Development;
4. Rajiv Gandhi Udyami Mitra Yojana;
5 Indira Awas Yojana
6 Indira Gandhi National Old Age Pension Scheme;
7 Jawaharlal Nehru Urban Renewal Mission
8 Jawaharlal Nehru Rojgar Yojna
9 Rajiv Gandhi Shramik Kalyan Yojna;
10 Indira Gandhi Canal Project, Funded by World Bank
11 Rajiv Gandhi Shilpi Swasthya Bima Yojana

Sate schemes

1 Rajiv Gandhi Rehabilitation Package for Tsunami Affected Areas,
2. Rajiv Gandhi Social Security Scheme, Govt. of Puducherry
3 Rajiv Ratna Awas Yojna;
4 Rajiv Gandhi Prathamik Shiksha Mission, Raigarh;
5 Rajiv Gandhi Shiksha Mission, Madhya Pradesh;
6 Rajiv Gandhi Mission on Food Security , Madhya Pradesh;
7. Rajiv Gandhi Mission on Community Health, M.P.
8 Rajiv Gandhi Rural Housing Corp.;
9 Rajiv Gandhi Tourism Development Mission, Rajasthan;
10 Rajiv Gandhi Computer Literacy Programme, Assam
11 Rajiv Gandhi Swavlamban Rojgar Yojana, Govt. of NCT of Delhi
12. Rajiv Gandhi Mobile Aids Counseling and Testing Services, Rajiv Gandhi Foundation
13 Rajiv Gandhi Vidyarthi Suraksha YojanaMaharashtra;
14 Rajiv Gandhi Mission for Water Shed Management, M.P.;
15 Rajiv Gandhi Food Security Mission for Tribal Areas, MP
16 Rajiv Gandhi Home for Handicapped, Pondicherry;
17 Rajiv Gandhi Breakfast Scheme, Pondicherry;
18 Rajiv Gandhi Akshay Urja Divas, Punjab;
19 Rajiv Gandhi Artisans Health & Life Insurance Scheme, Tamil Nadu;
20 Rajiv Gandhi Zopadpatti and Nivara Prakalpa, Mumbai;
21 Rajiv Arogya Sri programme, Gujrat State Govt. Scheme;
22 Rajiv Gandhi Abhyudaya Yojana, AP;
23 Rajiv Gandhi Computer Saksharta Mission, Jabalpur
24 Rajiv Gandhi Bridges and Roads Infrastructure Development Programme
25 Rajiv Gandhi Gramin Niwara Prakalp, Maharashtra Govt
26 Indira Gandhi Utkrishtha Chhattervritti Yojna , HP;
27 Indira Gandhi Women Protection Scheme, Maharashtra Gov;

28 Indira Gandhi Prathisthan, Housing and Urban Planning Department, UP Govt
29 Indira Kranthi Patham Scheme, Andhra Pradesh ;
30 Indira Gandhi Nahar Pariyojana, State Govt. Scheme;
31 Indira Gandhi Vruddha Bhumiheen Shetmajoor Anudan Yojana, Govt. of Maharashtra
32 Indira Gandhi Nahar Project, Jaisalmer, Govt. of Rajasthan
33 Indira Gandhi Niradhar Yojna, Govt. of Maharashtra;
34 Indira Gandhi kuppam, State Govt. Welfare Scheme for Tsunami effected fishermen; 35 Indira Gandhi Drinking Water Scheme-2006, Haryana Govt.
36 Indira Gandhi Niradhar Old, Landless, Destitute women farm labour Scheme, Maharashtra Govt.
37 Indira Gandhi Women Protection Scheme Maharashtra Govt.
38 Indira Gaon Ganga Yojana, Chattisgarh;
39 Indira Sahara Yojana , Chattisgarh;
40 Indira Soochna Shakti Yojana, Chattisgarh;
41 Indira Gandhi Balika Suraksha Yojana , HP;
42 Indira Gandhi Garibi Hatao Yojana (DPIP), MP;
43 Indira Gandhi super thermal power project , Haryana Govt.
44 Indira Gandhi Water Project, Haryana Govt.
45 Indira Gandhi Sagar Project, Bhandara District Gosikhurd Maharashtra;
46 Indira Jeevitha Bima Pathakam, AP Govt;
47 Indira Gandhi Priyadarshani Vivah Shagun Yojana, Haryana Govt;
48 Indira Mahila Yojana Scheme, Meghalaya Govt
49. Indira Gandhi Calf Rearing Scheme, Chhattisgarh Govt.
50 Indira Gandhi Priyadarshini Vivah Shagun Yojana, Haryana Govt.
51. Indira Gandhi Calf Rearing Scheme;
52 Indira Gandhi Landless Agriculture Labour scheme, Maharashtra Govt.

Sports/Tournaments/Trophies

1. Rajiv Gandhi Gold Cup Kabaddi Tournament;
2 Rajiv Gandhi Sadbhavana Run;
3. Rajiv Gandhi Federation Cup boxing championship
4. Rajiv Gandhi International tournament (football)
5. NSCI - Rajiv Gandhi road races, New Delhi;
6 Rajiv Gandhi Boat Race, Kerala;
7 Rajiv Gandhi International Artistic Gymnasti Tournament
8 Rajiv Gandhi Kabbadi Meet
9. Rajiv Gandhi Memorial Roller Skating Championshi;
10 Rajiv Gandhi memorial marathon race, New Delhi;
11 Rajiv Gandhi International Judo Championship, Chandigarh
12. Rajeev Gandhi Memorial Trophy for the Best College, Calicut;
13 Rajiv Gandhi Rural Cricket Tournament, Initiated by Rahul Gandhi in Amethi
14. Rajiv Gandhi Gold Cup (U-21), football;
15 Rajiv Gandhi Trophy (football;
16 Rajiv Gandhi Award for Outstanding Sportspersons;
17 All Indira Rajiv Gandhi Basketball (Girls)Tournament, organized by Delhi State
18 All India Rajiv Gandhi Wrestling Gold Cup, organized by Delhi State
19. Rajiv Gandhi Memorial Jhopadpatti Football Tournament, Rajura;
20 Rajiv Gandhi International Invitation Gold Cup Football Tournament, Jamshedpur
21 Rajiv Gandhi Mini Olympics, Mumbai
22. Rajiv Gandhi Beachball Kabaddi Federation;
23 Rajiv Gandhi Memorial Trophy Prerana Foundation;
24 International Indira Gandhi Gold Cup Tournament;

25 Indira Gandhi International Hockey Tournament
26 Indira Gandhi Boat Race;
27. Jawaharlal Nehru International Gold Cup Football Tournamen;
28 Jawaharlal Nehru Hockey Tournament.

Stadia

1. Indira Gandhi Sports Complex, Delhi;
2. Indira Gandhi Indoor Stadium, New Delhi;
3. Jawaharlal Nehru Stadium, New Delhi;
4. Rajiv Gandhi Sports Stadium, Bawana
5. Rajiv Gandhi National Football Academy, Haryana;
6. Rajiv Gandhi AC Stadium, Vishakhapatnam
7. Rajiv Gandhi Indoor Stadium, Pondicherry;
8 Rajiv Gandhi Stadium, Nahariagun, Itanagar;
9. Rajiv Gandhi Badminton Indoor Stadium, Cochin;
10. Rajiv Gandhi Indoor Stadium, Kadavanthra, Ernak;
11. Rajiv Gandhi Sports Complex , Singhu
12. Rajib Gandhi Memorial Sports Complex, Guwahati ;
13. Rajiv Gandhi International Stadium, Hyderabad
14. Rajiv Gandhi Indoor Stadium, Cochin;
15. Indira Gandhi Stadium, Vijayawada, Andhra Pradesh;
16. Indira Gandhi Stadium, Una, Himachal Pradesh;
17. Indira Priyadarshini Stadium, Vishakhapatnam;
18 Indira Gandhi Stadium, Deogarh, Rajasthan
19. Gandhi Stadium, Bolangir, Orissa

Airports/ Ports

1. Rajiv Gandhi International Airport, New Hyderabad, A.P.
2. Rajiv Gandhi Container Terminal, Cochin
3. Indira Gandhi International Airport, New Delhi
4. Indira Gandhi Dock, Mumbai
5. Jawaharlal Nehru Nava Sheva Port Trust, Mumbai

Universities/Education Institutes

1. Rajiv Gandhi Indian Institute of Management, Shilong
2. Rajiv Gandhi Institute of Aeronautics, Ranchi, Jharkhand
3. Rajiv Gandhi Technical University, Gandhi Nagar, Bhopal, M.P.
4. Rajiv Gandhi School of Intellectual Property Law, Kharagpur, Kolkata;
5. Rajiv Gandhi Aviation Academy, Secundrabad ;
6 Rajiv Gandhi National University of Law, Patiala, Punjab;
7 Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development, Tamil Nadu;
8 Rajiv Gandhi Aviation Academy, Begumpet, Hyderabad, A.P;
9. Rajiv Gandhi Institute of Technology, Kottayam, Kerala;
10 Rajiv Gandhi College of Engineering Research & Technology, Chandrapur, Maharashtra are among the 98 institutions named after Rajiv, Indira and Jawaharlal Nehru

Awards

1. Rajiv Gandhi Award for Outstanding Achievement
2. Rajiv Gandhi Shiromani Award
3. Rajiv Gandhi Shramik Awards, Delhi Labour Welfare Board
4. Rajiv Gandhi National Sadbhavana Award
5. Rajiv Gandhi Manav Seva Award
6. Rajiv Gandhi Wildlife Conservation Award
7. Rajiv Gandhi National Award Scheme for Original Book Writing on Gyan Vigyan
8. Rajiv Gandhi Khel Ratna Award
9. Indira Gandhi Prize for National Integration;

10. Indira Gandhi Priyadarshini Award;
11. Indira Priyadarshini Vrikshamitra Awards, Ministry of Environment and Forests
12. Indira Gandhi Memorial National Award forBest Environmental & Ecological;
13 Indira Gandhi Paryavaran Purashkar;
14 Indira Gandhi NSS Award
15 Jawaharlal Nehru Prize" from 1998-99, to be given to organizations (preferably NGOs) for Popularization of Science;
16 Jawaharlal Nehru National Science Competition
17 Jawarharlal Nehru Student Award for research project of evolution of DNA are among the 51 named after the family members.

Scholarship / Fellowship

1. Rajiv Gandhi Scholarship Scheme for Students with Disabilities
2. Rajiv Gandhi National Fellowship Scheme for SC/ST Candidates,
3. Rajiv Gandhi National Fellowship Scheme for SCandidates,
4 Rajiv Gandhi Fellowship, IGNOU;
5 Rajiv Gandhi Science Talent Research Fellows;
6. Rajiv Gandhi Fellowship, Ministry of Tribal Affairs;
7 Rajiv Gandhi National Fellowship Scheme for scheduled castes and scheduled tribes candidates given by UGC;
8 Rajiv Gandhi Fellowship sponsored by the Commonwealth of Learning in association with IGNOU;
9 Rajiv Gandhi science talent research fellowship given by Jawaharlal Nehru Centre for advanced scientific research are among others named after the family members.

National Parks/Sanctuaries/ Museums

1. Rajiv Gandhi (Nagarhole) Wildlife Sanctury, Karnataka;
2. Rajiv Gandhi Wildlife Sanctury, Andhra Pradesh
3. Indira Gandhi National Park, Tamil Nadu;
4. Indira Gandhi Zoological Park , New Delh;
5 Indira Gandhi National Park, Anamalai Hills on Western Ghats;]
6. Indira Gandhi Zoological Park, Vishakhapatnam;
7 Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya (IGRMS);
8. Indira Gandhi Wildlife Sanctuary, Pollachi;
9. Rajiv Gandhi Health Museum;
10. The Rajiv Gandhi Museum of Natural History
11. Indira Gandhi Memorial museum, New Delhi are parks and museums named after the family members.

Hospitals/Medical Institutions

1. Rajiv Gandhi University of Health Science Bangalore, Karnataka;
2 Rajiv Gandhi Cancer Institute & Research Centre, Delhi;
3 Rajiv Gandhi Home for Handicapped, Pondicherry;
4 Shri Rajiv Gandhi college of Dental Science & Hospital, Bangalore, Karnataka;
5. Rajiv Gandhi Centre for Bio Technology, Thiruvanthapuram, Kerala;
6 Rajiv Gandhi College of Nursing, Bangalore, Karnataka;
7 Rajiv Gandhi Super Specialty Hospital, Raichur;
8. Rajiv Gandhi Institute of Chest Diseases, Bangalore, Karnataka;
9 Rajiv Gandhi Paramedical College, Jodhpur; 10.Rajiv Gandhi Medical College, Thane, Mumbai are among 39 medical institutions named after the family members.

Maharashtra Institutions/Chairs/ Festivals

1. Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development. (RGNIYD), Ministry of Youth and Sports;
2 Rajiv Gandhi National Ground Water Training & Research Institute, Faridabad, Haryana;
3. Rajiv Gandhi Food Security Mission in Tribal Areas
4. Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development;
5. Rajiv Gandhi Shiksha Mission, Chhattisgarh;
6. Rajiv Gandhi Chair Endowment established in 1998 to create a Chair of South Asian Economics
7 Rajiv Gandhi Project - A pilot to provide Education thru Massive Satellite Connectivity up grassroot Level are among 37 named after Rajiv, Indira and Nehru.

Pondicherry Roads/Buildings/places

1. Rajiv Chowk, Delhi;
2 Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung, New Delhi;
3 Rajiv Gandhi Handicrafts Bhawan, New Delhi;
4 Rajiv Gandhi Park, Kalkaji, Delhi;
5 Indira Chowk, New Delhi;
6 Nehru Planetarium, New Delhi;
7 Nehru Yuvak Kendra, Chanakyapuri, New Delhi;
8 Nehru Nagar, New Delhi; 9 Nehru Place, New Delhi;
10 Nehru Park, New Delhi Nehru House, BSZ Marg, New Delhi, are among 74 named after the family members.

Courtsy: The Pioneer, New Delhi, March 27, 2009

Diary of Events

February 1 BSP supremo Mayawati, in an attempt to cement her Muslim support base, inducted a prominent leader of the Jamaat-e-Ulema into her party. This is her second major move after successfully blending the Dalit and upper caste votes to secure clear majority in her home state. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

_________ Elaborating on false cases being fielded in recent times, the CJI said that relatives not involved with a matrimonial dispute were unfairly implicated. “In some cases, 498A is grossly misused", he said. Balakrishnan was speaking at a seminar, ‘Marriage laws - issues and challenges’, organised by the National Commission for Women. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

February 2 With active help from China and North Korea, Pakistan has surged well ahead of India in the missile arena. The only nuclear-capable ballistic missile in India’s arsenal which can be said to be 100% operational as of now is the short-range Prithvi missile. *The Times of India, New Delhi, p. 7.*

February 3 Sri Rama Sena has now turned its wrath on Valentine’s Day. Terming it ‘anti-Indian culture’, it has warned people of attack if they celebrate it. At this rate, it’ll take all the fun out of Feb. 14. It has warned educational institutions, restaurants and other organisations not to celebrate Valentine’s Day. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

________ The Indian Consul General in Dubai, Venu Rajamony, told *The Pioneer* that ‘sponsors’ of Indian workers have booked 20,000 seats on the Indian national carrier to send them back home because of

non-renewal of their contracts. The number of jobless Indians returning from the Gulf countries is expected to touch 1 lakh by the end of April. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

February 5 The modernisation plans of the armed forces to maintain operational preparedness have been badly compromised as the Defence Ministry surrendered a whopping Rs 16,000 crore in the five years of the UPA rule. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

February 6 With 'lasting love' as his mantra, Sri Rama Sena chief Pramod Muthalik said dating couples in Karnataka would be forced to tie the knot on Valentine's Day. "Love is an emotional and boding issue. I am not against love. But it should not be confined to one particular day. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

February 7 The pocket-size translation of the Quran has already landed six men in prison in Afghanistan and left two of them begging judges to spare their lives. They're accused of modifying the Quran and their fate could be decided soon. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

February 9 Universities in the US are offering Indian languages and culture. Satish K Tripathi, provost and executive vice president for academic affairs at UB, said Sanskrit, too, has been introduced at the University as an under-graduate course. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

February 11 In the first direct message to India by the al-Qaeda Mustafa Abu al-Yazid, commander of its operations in Afghanistan and ranked behind No.2 Ayman al-Zawahiri, has warned of more attacks like the one on Mumbai, and said its economic interests would be targeted if it retaliates against Pakistan. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

February 12 Muslim members of the Bahujan Samaj Party (BSP) no longer have to greet each other with "Jai Bhim". Party president Mayawati announced this after the Darul Uloom, Deoband declared that the greeting was un-Islamic and against the Sharia. *The Mail Today, New Delhi, p. 16.*

_________ In an unprecedented gesture towards the Muslim minority of Andhra Pradesh Chief Minister YS Rajasekhara Reddy returned 50 acres of prime land to the State Waqf Board, which had become a bone of contention between the board and the State Revenue department. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

________ Ravindra Kumar, editor of The Statesman, and Anand Sinha, its printer and publisher, were arrested from their residence for hurting the religious sentiments of Muslim community "on a specific complaint." 'Why should I respect these oppressive religions?', by Johann Hari, also published in The Independent, was carried on The Statesman edition dated February 5. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

February 14 India will develop a nuclear-capable missile with a range of over 5,000 km as part of the Agni series by December next year, the country's top defence scientist has said. *The Indian Express, New Delhi, p. 11.*

February 18 Janata Party president Subramanian Swamy was assaulted by a group of lawyers in a courtroom at the Madras High Court on the question of allowing the Government to take over the temple administration. The agitated lawyers shouted, "get out you Brahmin dog", "you LTTE-hater". They hurled rotten eggs at Swamy, soiling his clothes and beating him on the right side of his neck. Swamy was waiting for his case to come up in the courtroom when the attack took place. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

_________ With the Government adding about Rs 3,00,000 crore to the public debt annually in the last few years, the total public debt is estimated to zoom to a whooping Rs 34,06,322 crore by March 2010, nearly double the amount recorded seven years ago. The average debt of a citizen would nearly he equal to his 10-month income, which on an annual basis has recently been estimated at Rs 38,000 by the Central Statistical Organisation (CSO) for a population of 115.4 crore. *The Pioneer, New Delhi, p. 10.*

February 19 Israel is involved in a covert war of sabotage inside Iran to try to delay Tehran's alleged attempts to develop a nuclear weapon, a British newspaper said quoting a former CIA agent and intelligence experts. *The Times of India, New Delhi, p. 23.*

February 20 The Indian National Defence University (INDU) has finally come to Haryana with Binola in Gurgaon getting the nod of the Prime Minister's Office. The cost of acquisition would be borne by the ministry, which had already been informed that the tentative cost of the land acquisition would come to nearly Rs 100 crore. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

February 21 Tehran: 31-year-old Ameneh Bahrami wants Majid Mohavedi, 26, to be slowly blinded. Sulphuric acid will be dropped into his eyes as punishment for pouring acid on her five years ago. Woman was blinded by classmate after she spurned his marriage offer. *The Times of India, New Delhi, p. 23.*

_________ In the wake of the CBI investigations into the Satyam scam, five parties demanded prosecution of Andhra Pradesh Chief Minister YSR Reddy for his alleged involvement in one of the biggest corporate frauds in the country. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

February 22 But this area Pakistan was never a single-faith entity Hindus and later Sikhs created, along with Muslims, a dynamic shared culture that blossomed through partnership. The region was ruled successively by Muslims, Sikhs and Christians. No ruler, not even Ghazni, drove Hindus and Sikhs out. It was only after 1947 that the region became a single-faith hegemony, and from that point a breeding ground for theocratic militancy. *The Times of India, New Delhi, p. 22.*

_________ Dr V P Gupta of Council of Scientific and Industrial research's, who created Traditional Knowledge Digital Library (TKDL) says: "Copyrights over yoga postures and trademarks on yoga tools have becoming rampant in the West. Till now, we have traced 130 yoga-related patents granted in the US." *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

February 23 Lucknow: Believed to be among the oldest brick shrines in India, Lucknow University's department of ancient Indian history and archaeology has unearthed a 2,000-year-old Shiva temple as part of its excavation project recently in Uttar Pradesh's Unnao district. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

_________ Ashok Singhal, head of the VHP, said in the letter - to declare India a friend of Islam. "The Dharm Raksha Manch is particularly concerned that Islamic scriptures have served as the inspiration behind these attacks, and concerned that the same might occur again in the future," he said. We firmly believe that till the time Islamic leaders do not condemn religion-inspired violence, terrorism in this country will not come to an end", Singhal said. "If Islam is a religion of peace, as they propagate, then we expect them to issue a fatwa clearing these views," he added. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

February 26 In a verdict that evoked wide criticism and countrywide protests in Pakistan, the Supreme Court ruled former premier Nawaz Sharif and his brother Shahbaz Sharif ineligible to contest for any public office. Not only has the verdict added to the simmering political instability, but also has put Pakistan's two main political parties, the PML-N and the PPP, on a collision course reminiscent of the 1990s. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ HRD ministry's last-minute effort to dole out favours could result in major vacancies in the University Grants Commission as the entire top team, barring chairperson Sukhdeo Thorat who did not apply, has been shortlisted for the posts of vice-chancellor of 15 central universities. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

February 27 Noted Islamic scholar and law Commission member Tahir Mahmood has joined issue with the Vishwa Hindu Parishad for demanding an edict (fatwa) from Darul Uloom Deoband but avoided the main issue. He declared the whole idea was based on wrong premises. Mahmood, a former National Commission for Minorities chairman, told *HT*. "The Muslims of India have in the past defended and will always defend the nation against any external aggression irrespective of the aggressor's religion. For this, they don't need any *fatwa,*" he said. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 15.*

February 28 A stunning new photo taken by astronomers shows a Big Brother-style cosmic eye, nicknamed the "Eye of God", staring, down from space. According to a report in New Scientist, the amazing object is actually a shell of gas and dust that has been blown off by a faint central star. Our own solar system will meet a similar fate five billion years in the future. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

_________ Praveen Togadia has said that the Left Government has been promoting Islamic fundamentalism by ensuring pension for *madrasa* teachers. He said, *madrasas* have become recruiting hubs of *jehadis*. *The Indian Express, New Delhi, p. 8.*

March 2 A monk set himself on fire to protest against the Chinese government at a Tibetan Buddhism monastery. Reports suggest that the monk was shot at by the police as he emerged out of the Kirti Monastery in Aba and set himself on fire afternoon. The London-based group Free Tibet released details of the Aba incident saying the monk was holding a flag with an image of exiled Dalai Lama when he protested. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

_________ A chapter on the life of M F Husain has been struck out from a NCERT book following a decision by the Himachal Pradesh Board of School Education. The board has decided to replace it with a chapter on another acclaimed painter Sobha Singh, in whose name the state has set up an art gallery at Andretta in Kangra district. *The Indian Express, New Delhi, p. 10.*

March 4 In an extraordinary archaeological finding, a big housing complex that matured during the Harappan era has been discovered in this little known village about 40 km from Rohtak. The team of archaeologists from Research Institute for Humanity and Nature, Kyoto Japan, Deccan College, Pune and Maharshi Dayanand University, Rohtak, discovered the habitation site spread over 18.5 hectare. It has four big complexes and a cemetery spread over about three hectare. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

March 6 The VHP is set to conduct over 100 public meetings in Karnataka to seek votes for parties pursuing its agenda of protection of Hindu culture. Three major

meetings will be held in Bangalore, Mangalore and Mysore over the next 10 days. The VHP's concerns, to be highlighted at the meeting, include the "dip" in the Hindu population vis-à-vis Muslims, conversion of Hindu girls in the name of love and forced conversions"; Islamic terrorism and increasing westernisation; the Ram temple at Ayodhya; and a uniform civil code. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

March 8 The Sachar Committee report submitted in November 2006 had estimated there was six lakh acres of land under Wakf and their market worth could about Rs 1.2 lakh crore. It had also made out a case for efficient use of these properties which could generate a minimum return of 10% which is about Rs 12,000 crore per annum said the release issued by the body. *The Times of India, New Delhi, p. 3.*

March 10 Two bombs exploded in a Tibetan region damaging a police car and a fire engine the Chinese state media said. Another report suggested that two hand-made bombs exploded after a clash between the police and the local people in Qinghai Province. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

March 11 While strongly criticising the attitude of China towards Tibet, Tibetan spiritual leader Dalai Lama said that the China has launched a "brutal crackdown" in Tibet. He said that the Tibetan culture and identity are "nearing extinction". "The Tibetan people are regarded as criminals, deserving to be put to death." *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

_________ Tibetans and their supporters rallied across the Asia-Pacific region demanding an end to Chinese rule in their homeland on the 50th anniversary of the Dalai Lama being forced into exile. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

March 14 The minority Muslim community in Nepal threatened to enforce a general strike in the capital if the Maoist-led Government fails to recognise them as a separate ethnic group in the Terai plains. *The Pioneer, New Delhi.*

_________ The VHP said it will canvass for parties and candidates in the coming Lok Sabha elections who promise to work for the 'Hindutva' agenda. To close down the madarsas, legislation for constructing Ram temple (at Ayodhya) and speak for the Hindu rashtra (Hindu nation), VHP leader Pravin Togadia told mediapersons. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

March 15 Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) chief K.S. Sudarshan blasted officials of the National Council of Educational Research and Training (NCERT) saying the nation's education system is "polluting young brains". "The people running the NCERT have nothing to do with the country's religion and culture". "The entire blame for the sorry state of our country's education system lies on Arjun Singh," he said, adding the NCERT comes under Arjun's ministry. *The Mail Today, New Delhi, p. 7.*

March 16 **Geological field evidence has established for the first time that the original length of the 19,000-feet high Siachen Glacier, in what is currently Indian territory, was 150 kilometres, an Indian researcher said. It is now down to 74 kilometres. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1. & 9.***

_________ United States is said to have tracked down the world's most wanted terrorist, Osama bin Laden, in the impenetrable Hindu Kush mountains (the mountain of Hindus slaughter) in Pakistan's scenic Chitral region, according to a media report. *The Hindsutan Times, New Delhi, p. 15.*

_________ Top intelligence agencies, now see a strong link among a series of significant developments in Dhaka prior to the unprecedented BDR mutiny at its Pilkhana headquarters on February 25. The agencies suspect the whole episode was part of a Pakistani plot - helped by Bangladeshi collaborators - to fuel revolt in the armed forces for upstaging the Sheikh Hasina government. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

March 18 **One of London's most important gurdwaras, housing priceless religious books, has been gutted in a suspected racist attack in Britain news report said. *The Times of India, New Delhi, p. 9.***

March 20 I regret not being a *mufti*. Had I been one, I would have issued just one *fatwa* that going with the BJP amounts to committing *kufr*. That was senior Congress leader Imran Kidwai speaking at an election rally in Chandigarh on March 15, the BJP told the Election Commission. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ Violence returned to Orissa's Kandhamal district when suspected Naxalites shot and killed Prabhat Panigrahi, a local RSS leader, in Rudiguma village, 330 km from Bhubaneswar. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 11.*

March 21 The Government appointed Air Marshal Pradeep Vasant Naik as the next air chief after the present incumbent Air Chief Marshal Fali H. Major retires on May 31. Naik, at present, is the vice chief of IAF. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ RSS has decided to lend full support in the ensuing general elections to a party which espouses national interests and does not divide people by its votebank politics of appeasing a section of the society. RSS cadres will fan out across the country under the initiative Dharma Raksha Manch led by saints, sadhus in a campaign for its preferred party. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

_________ Jammu & Kashmir Chief Minister Omar Abdullah performed special prayers inside the holy cave shrine of Mata Vaishno Devi located in Trikuta hills along with his wife Payal Abdullah seeking divine intervention to bail him out of the crisis emerging out of the Bomai firing incident. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

March 22 A CD of Varun's speech at Pilibhit is worth Rs 15,000. Yet, political parties and mediapersons are lapping them up. "He is a BJP leader. He has ordered 200 copies". Jagdish Yadav, who claimed to be a Samajwadi Party man, placed an order for 150 copies. "The CDs must reach the party office by afternoon". "The Congress has already procured 300 copies of the CD and distributed them in the constituency," said Som Chaudhary a leader or the party's city unit. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 9.*

_________ In a significant change of guard in the 84-year-old Hindu nationalist organisation, Mohan Bhagwat 58 took over as the new *Rashtriya Swayayamsewak Sangh* (RSS) *Sarsanghchalak*, after 78-year-old K S Sudarshan relinquished the post citing health reasons. In a related development, Suresh Joshi replaced Bhagwat as general secretary. A confidante of Bhagwat, Joshi got a formal nod from the Sangh Parivar to become the general secretary. The others who held the coveted post earlier were Dr Laxman Vaman Paranjpe (1930-31), Madhavrao Sadashivrao Golwalkar (1940-1973), Madhukar Dattatraya Deoras, better know as Balasaheb (1973-1993) and Rajendra Singh, also known as *Rajjubhaiya* (1993-2000). *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

March 23 No matter what happens in Afghanistan, "the situation there will remain the same if Pakistan doesn't change", US special envoy on Pakistan and Afghanistan Richard Holbrooke told TOI in an exclusive interview. *The Times of India, New Delhi, p. 7.*

_________ Lucknow: Tirupati's Balaji is India's richest deity and Ayodhya's Ram Lalla, arguably, the most protected but Mathura's toddler-God has stolen a march over them all. From changing a dozen dresses a day to taking his daily pick from more than 100 cuisines on offer, Lord Bankey Bihari has now become the first deity to boast a bullet-proof cover. *The Times of India, New Delhi, p. 8.*

_________ A VHP-backed grouping of sadhus, the Dhama Raksha Manch, has praised Varun Gandhi and attacked those criticising him. "The country needs a leader like Varun Gandhi and those who oppose him are anti-nationals… His speech reflects the feeling of millions of Hindus," said Manch convenor Mahant Gyan Das, adding that they would visit Pilibhit to campaign for Varun and propagate his speech in other parts of the country. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ The RSS sought to make a distinction between Buddhism on one side and Christianity and Islam on the other, saying conversions to the latter were part of larger international designs and hence shouldn't qualify for reservations. On the last day, the Pratinidhi Sabha passed three resolutions, one "policy of religious discrimination" which it said is "dangerous for national integrity". *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

March 26 On the alleged remarks of Baalu against the court, hearing Setu samundram saying why it held a "unprecedented hearing" on Sunday to ban the bandh, the Bench of Justices B N Aggarwal and G S Singhvi observed, "It shows utter ignorance of such men. They are the people who are governing the system. They should know that for the past 50 years, courts in India have been working on Sundays." *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

_________ The Indian military fears a 'Chinese aggression' in less than a decade. A secret exercise, called 'Divine Matrix', by the army's military operations directorate has visualised a war scenario with the nuclear-armed neighbour before 2017. *The Hindsutan Times, New Delhi, p. 7.*

March 27 Congress might have termed Varun Gandhi's inflammatory speeches in Pilibhit as violent and communal, but the party saw nothing wrong in aligning with a radical Muslim outfit, Ittehad-e-Millat Council in Uttar Pradesh whose president had announced a reward of Rs 25 crore on former US President George Bush's head. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ Pilibhit MP Maneka Gandhi has thrown her weight behind son Varun Gandhi who is under attack for an alleged militant speech saying the Congress was playing up the issue to brush under the carpet its own 'anti-Sikh' acts. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

March 30 A vast electronic spying operation may have been infiltrated by China computers and has stolen documents from hundreds of government and private offices around the world, including the Indian embassy in Washington and those of the Dalai Lama, Canadian researchers have concluded. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

March 31 Rejecting the plea of a Muslim student that he should be permitted to sport beard in his convent school, the Supreme Court observed secularism cannot be

overstretched and that “Talibanisation” of the country cannot be permitted. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ In the run-up to the Lok Sabha poll, the NDA has decided to mount sustained pressure on the Manmohan Singh Government to take concrete steps for bringing back the black money deposited by Indian in foreign banks.*The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

Select Articles

Think it over, bar-bar : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, February 1, 2009, p. 4.
The proliferation of such bars in many metropolitan cities in recent years has provided sections of the youth a new destination for hanging around after (and, sometimes, during) college hours. Frankly, I do not find anything violently objectionable about young people enjoying themselves in relatively secluded places - at least they are away from leering voyeurs that prowl our public parks. As long as they do not break the law in terms of public decency or the official age restriction for consumption of alcohol (which, at 25, is rather unrealistic, but then so are many of our laws), I don’t see why this should become a matter of pressing public concern.

Aspiring powers and a new old friendship : Ramin Jahanbegloo, The Times of India, New Delhi, February 1, 2009, p. 10.
The dynamics of Indo-Iranian relations are as complex as the competing civilizations they enmesh, and when the interests of superpowers such as the US, Russian and China are introduced into this mix, the relationship becomes loaded with strategic possibilities of vital importance to the world.

Only a Gandhi can be king : Swapan Dasgupta, The Pioneer, New Delhi, February 1, 2009, p. 1.
Swapan Dasgupta makes light of the claim by anti B.J.P. Tabloid that congress is a youthful party compared to the B.J.P. The new mansabdari system that has become the basis for the Congress is what distinguishes it from the other national party. Arun Jaitley, Sushma Swaraj, Narendra Modi, and Shivraj Singh Chouhan may be faulted for being born when they were. Tragically, selecting the year of birth is something that an individual has very little control over. Yet, what distinguishes each of them from the Congress youth pantheon is that they were not to the manor born. They have got to where they have on the strength of their abilities. They have not inherited political seats and they are not blessed by entitlement.

Ignoring a true friend : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, February 3, 2009, p. 9.
March 2009 will mark 50 years in exile for the Dalai Lama and his followers. During this half-a-century, the Tibetan leader has supported India and stood by the country in the face of international criticism. Is it not time for India to officially recognise the Dalai Lama’s contribution to peace and tolerance and honour him with the Bharat Ratna?

Don’t let the rot spread : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, February 3, 2009, p. 8.
Neither the apex court, nor the NHRC offered any explanation for acting upon unsigned documents! More recently, many female victims in the said cases have testified in court that they were never raped, never made claims of rape before the police, and signed the affidavits written in English ‘in good faith’. Thus, a range of Gujarat victims have publicly testified to being misused by politically motivated activists, and the Supreme Court and other authorities have maintained studied silence on the issue.

Iran’s secret purges : Caroline Samandari, The Indian Express, New Delhi, February 3, 2009, p. 12.
In 1979, with the establishment of the Islamic Republic of Iran, the persecutions took a new direction, becoming

official government policy. Thirty years on, the Islamic Republic still persecutes minorities.

When Pakistan Fails : K Subrahmanyam, The Times of India, New Delhi, February 4, 2009, p. 20.
We need a full-time cabinet minister for internal security. There is an imperative need to have a director of national intelligence and our National Security Council should be focusing wholly on protecting this country against *jihadi* aggression. Public opinion should be mobilised to educate the public about the nature of the threat we face.

Reason, faith and ignorance : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, February 4, 2009, p. 9.
Pluralism and freedom help individuals acquire knowledge and embrace that which is logical. Theocratic Islam denies both pluralism and freedom of choice.

The threat is common : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, February 6, 2009, p. 16.

The jarring US intent to focus on preventing attacks against America by regionally confining terrorism means that democracies with uncongenial neighbourhoods, like India and Israel, will bear the brunt of escalating terrorism.

Nehru is Congress answer to economic meltdown, for the BJP it's Mahatma : D K Singh & Vivek Deshpande, The Indian Express, New Delhi, February 7, 2009, p. 1. & 2.
In the run-up to the general election, the Congress and the BJP each claim they have found an answer to the global economic crises: Jawaharlal Nehru, for the Congress, and for the BJP, none other than the Mahatma himself and Pandit Deendayal Upadhyay.

Yoga beyond religion : Firoz Bakht Ahmed, The Times of India, New Delhi, February 8, 2009, p. 21.
Yoga is not anti-Islam. In fact, it's a set of skills that can enhance the practice of any religion. The purposes of yoga and *Tariqat-e-Naqshbandi* (Sufi lifestyle) are similar since both aim at achieving mystical union with the ultimate reality namely Brahma or Allah.

DMK kills another Hindu tradition : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, February 9, 2009, p. 9.
The takeover of Chidambaram temple by the Tamil Nadu Government is the first step towards destroying the famed shrine. For, temples are not meant to promote tourism.

YSR son-in-law, the evangelist, triggers War of the Word : Sreenivas Janyala, The Indian Express, New Delhi, February 10, 2009, p. 3.
A three-day prayer meeting organised last week in Vijayawada has the Andhra Pradesh Opposition up in arms. They are accusing the Government of promoting evangelist Brother Anil Kumar by helping him organise the Jesus Christ Blessings Festival-he is the son-in-law of Chief Minister Y S Rajasekhara Reddy.

Classic facelift on anvil for city 'older than history' : Durgesh Nandan Jha, The Pioneer, New Delhi, February 10, 2009, p. 3.
The city of Varanasi, once described by American writer Mark Twain as "older than history, older than tradition, older even than legend, and looks twice as old as all of them put together," may soon wear a classic look. The Ambassador of Spain in India, Ion de la Riva Guzman de Frutos, and another senior diplomat from the country Oscar Pujol. Have extended technical assistance and fund via the Spanish Government in collaboration with the Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) to develop the holy city into a world heritage site.

Coke has a rival-RSS's cola, with cow urine : Rajeev Khanna, The Indian Express, New Delhi, February 11, 2009, p. 7.
"It will be a revolution of sorts. The acceptance of cow urine as a potent medicine is increasing and once it comes as a cold drink, its demand will definitely increase." Prakash asserted that their soft drink with cow urine will not only be natural but cost-effective too. "In addition to this, it will prove and justify the high stature accorded to a cow in Indian culture," he said.

Dealing with an insane Pakistan : Shobori Ganguli, The Pioneer, New Delhi, February 12, 2009, p. 8.
What is infinitely more disturbing is that Islamabad's writ is shrinking alarmingly. Most of Pakistan stands brutally Talibanised today. This entity is reflected in videos like Yazid's or that of a Polish engineer minutes before he is ruthlessly beheaded. This is not a Pakistan that can be engaged with diplomatically. This is a Pakistan that cannot be bought over with development work. This Pakistan can brazen out a military attack. This Pakistan speaks the insane language of hate and terror. Unfortunately, means to successfully snuff this Pakistan out remain elusive.

Terrorism in Assam : Gurmeet Kanwal, The Tribune, New Delhi, February 14, 2009, p. 13.
Strategic stalemate must come to an end. The security forces have done what they could; the socio-economic problem has not yet been adequately addressed.

Samskaras, not violence, better resistance : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, February 14, 2009, p. 9.
Pubbing may be some people's idea of fun, but a society rooted in its traditions and exposed to nationalist education ultimately rejects it. The sections that has unhesitatingly accepted western, or let's call it 'globalisation', is the metropolitan strata, it's defenders in the Delhi-based media (which calls itself 'national' but is actually the most provincial. But it cannot be denied that this is precisely the section to which the fruits of economic globilisation have been limited.

Relevance of Ram : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, February 15, 2009, p. 4.
Incidentally, even as LK Advani expounded the BJP's position on Ram Mandir at Nagpur, Sonia Gandhi made a curious remark while addressing a Congress convention in Delhi. She is believed to have contended that those who invoke Ram's name are incapable of combating terrorism. Presumably, she sought to insinuate that the BJP had itself

indulged in violence on this issue and hence could not be trusted to deal with other groups professing a violent philosophy.

Pub incident : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, February 15, 2009, p. 5.
Linking the Mangalore pub incident with the Sangh Parivar had a political motive as neither the RSS nor BJP was involved in it. Youth of a small, insignificant organisation stepped out on the streets to ostensibly defend Indian civilisation and cultural traditions.

A long winter in Swat : Murtaza Razvi, The Indian Express, New Delhi, February 18, 2009, p. 12.
The people of Swat deserve better, not least because in last year's election they had voted for the same secular parties, the People's Party and the Awami National Party, which have now buckled under pressure.

A bigot and his 'Islamic Bomb' : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, February 19, 2009, p. 8.
Dr Khan's close associate and fellow nuclear scientist Sultan Bashiruddin Mehmood, who, along with his colleague Chaudhari Abdul Majeed, was detained shortly after the terrorist strikes of 9/11. Mr Mehmood openly voiced support for the Taliban and publicly advocated the transfer of nuclear weapons to other Islamic nations, describing Pakistan's nuclear capability as the property of the whole *ummah* (Muslim nation). Mr Mehmood and Mr Majeed also acknowledged that they had long discussions with *Al Qaeda and Taliban* officials. A 'Fact Sheet' put out by the White House stated that both scientists had meetings with Osama bin Laden and Mullah Omar during repeated visits to Kandahar, with *Al Qaeda* seeking their assistance to make radiological dispersal devices.

Unleashing a killer virus : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, February 20, 2009, p. 8.
The 12.5 lakh inhabitants of Swat Valley are now all Muslims, fanatically loyal to their faith, and hostile to the rest. There is no trace of Buddhism or its followers. Aggressive Islam has completely obliterated the pre-Islamic past of Swat Valley, as it has happened in Arab countries.

Will Ganga ever exist? : ASRP Mukesh, The Pioneer, New Delhi, February 20, 2009, p. 13.
When the Tehri dam was built a decade ago, environmentalists had warned it would bring about a demise of all major rivers emanating from the Gangotri glacier. If the Bhagirathi, one of the largest tributaries of the Ganga, dries up, then we can imagine what will be the fate of the rest.

Swat a ruse to regain Kabul : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, February 21, 2009, p. 8.
The priority for the Generals in Rawalpindi as well as the intersecting Taliban militias on either side of the Durand Line is to regain control of Kabul. This is the greater *jihad*. For the moment, Kashmir is the lesser *jihad*; it can be revved up later. That is why Islamabad is pragmatic enough to be willing to sacrifice low-level LeT assets.

The purpose of history : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, February 22, 2009, p. 4.
I recall these personal anecdotes only to underline my anguish at the attempt to rewrite history textbooks and the tragic politicisation of the subject at the hands of Marxist apparatchiks masquerading as scholars. In view of the flagrant abuse history is being subjected to, I believe the time has come for every thinking person to ask some fundamental questions about the way it should be taught.

In Swat, women will pay the price of peace : Mohammed Wajihuddin, The Times of India, New Delhi, February 22, 2009, p. 15.

The Taliban doesn't allow education of girls. They are punished, even killed, for having careers or desiring to go to school. Refusal to wear veil, dancing in public are punishable by death. Using a musical ringtone can lead to the confiscation of the mobile phone or a hefty fine.

Sindhis' woes : Samuel Baid, The Pioneer, Agenda, New Delhi, February 22, 2009, p. 5.

The enthusiasm with which the Sindhis voted for the Pakistan people's party (PPP) in the February 2008 elections is fast turning into disillusionment. But in the past 11 months of PPP rule in Pakistan, the Sindhis are disillusioned to say "the PPP is a party for Punjab and not for Sindh". What GM Syed wrote in this book remains the basis of the demands, of all *Jiye Sindh*s factions. JSQM President Basheer Qureshi told the Larkana rally that Sindh was being fleeced and looted in the name of religion.

Change the flawed system : Upamanyu Hazarika, The Pioneer, New Delhi, February 23, 2009, p. 9.

In the US, every important appointment by the Government has to be cleared by the Senate. There are times when nominations are rejected or have to be withdrawn because of conflict of interest. If we had a similar system, then the unpleasant dispute over Navin Chawla could have been avoided.

US has begun to capitulate : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, February 23, 2009, p. 9.

In short, 2009 is looking like, a year of massive defeat for the US and its friends in West Asia meanwhile, Washington, DC is blind to this trend, pursuing a futile attempt to conciliate its enemies, losing time and not following the policies desperately needed, instead, the US should put itself as leader of a broad coalition to resist Islamism and Iranian ambitions. Alas, the Obama Administration is fooling around while West Asia burns Turn around! Turn Around!

Ox Year could be tough : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, February 24, 2009, p. 9.

There are reports of fresh political dissent in Tibet and March 28 could see the eruption of violence. After a 'glorious' Rat year, Beijing, isn't taking any chances. A 'Strike Hard' campaign has been launched on the Roof of the World to pre-empt protests by Tibetans.

Is this the end of ideology? : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, February 24, 2009, p. 9.

The 'dynasty factor' is not limited to the Congress: Children of many politicians now look forward to political inheritance. It would seem ideology has been subsumed by family.

You want Uncle Sam : Thomas Friedman, The Indian Express, New Delhi, February 26, 2009, p. 13.

A lot of people seem to be realising that the alternative to a US-dominated world is not a world dominated by someone else or someone better. It is a leaderless world. "There is no one who can replace America. Without American leadership, there is no leadership", said Lee Hong-koo, South Korean's former ambassador to Washington."

The wages of dereliction : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, February 27, 2009, p. 13.

This government has used the global economic crisis to cover up its own mismanagement. The NHAI is now taking 20 months to award a contract as against the 5 months that have been specified. Surely the global meltdown is not to blame for this stretching out. After the devastating 2006 Mumbai flood, Manmohan Singh announced a 1260 crore 'special package' to 'rejuvenate' the Mithi river. Since then, Maharashtra has been told that the Centre is not going to give a single paisa.

Half truths and whole lies (A point-by-point expose of the government's shifty economic logic) : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, February 28, 2009, p. 13.

Under NREG, of the 3.81 crore rural households that requested work, only 22 lakh households-a mere six per cent-got the 100 days of legally guaranteed employment. When UPA came to power, 7.8 crore households had no electricity. Its village electrification scheme rewrote the target: not to provide' electricity to all' by 2009, as the CMP had promised; but to provide 'access to electricity to all'.

Parties try to keep afloat as politics over Ganga gets murky : Rajeev Khanna, The Indian Express, New Delhi, February 28, 2009, p. 8.

Ahead of the forthcoming Lok Sabha polls, the sanctity of Ganga and the construction of hydel projects on the river are gradually snowballing into a major political issue in Uttarakhand. The flow of rivers in the state has come down from 995 litres per seconds in 1993 to 85 litres per second in 2003.

Destructive federalism : Chandan Mitra, The Pioneer, Foray, New Delhi, March 1, 2009, p. 4.

Of the two national parties, the BJP is less affected but not immune to pressures from its regional allies. As for the Congress, it is currently being used as a punching bag although it continues to pretend it calls the shots. To a large extent, Sonia Gandhi is to blame for the fate that has befallen her organisation. Congress was never comfortable with alliances. In that past it has held the dubious record of pulling down successive Governments at the Centre, starting with Charn Singh's in 1979.

Muslims can prosper under Modi-Imam : Saeed Khan, The Times of India, New Delhi, March 1, 2009, p. 11.
Mufti Shabbir Ahmed Siddiqqi (52) - the Imam of Ahmedabad's biggest mosque, Jama Masjid. Is soft on the Narendra Modi government with which he has been building bridges in turbulent times. He would like Modi, who is popular among Shias, to gain acceptance among Sunnis too. The Imam blames Congress as much as BJP for the 2002 riots but feels the time has come now to move on. He said, that the projection of the riots was much graver than what had actually happened. Stating clearly that Modi actually does not need Muslim votes to win the elections. He is also happy that the spread of the hardliner Tablighis in Gujarat has been checked by the Modi government which put an end to the influx of foreign funds through 'hawala' for the spread of the Tablighi ideology.

Losing integrity-Is Pakistan dividing again? : Shaun Gregory, The Times of India, New Delhi, March 1, 2009, p. 24.
Pakhtunistan or Pushtunistan stands for Afghanistan's agitation for the creation along the North-West Frontier of a Pathan state. In 1947, Afghanistan voted against the admission of Pakistan to the United Nations. There have been major crises in Afghan-Pakistani relations over this issue in 1955-57 and 1961-63. However, there is no state nor has there ever been one of Pakhtunistan or Pushtunistan. Still, it remains a nightmare for Pakistan.

Stirring the W Asian pot : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, March 2, 2009, p. 9.
The Israel-Palestinian conflict is not the fulcrum of West Asia whose solution will make Islamism, terrorism, Iran's nuclear weapons' programme, anti-Western or anti-American sentiments, Iraq's instability, and all other regional problems disappear. The Israeli-Palestinian conflict is not easily solvable.

The mote and the beam : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, March 3, 2009, p. 8.
So deep is the disarray caused by insider accounts of alleged sexual abuse and moral depravity in the Kerala Catholic church that the authorities have failed to come up with a coherent response even two weeks after Amen, a nun's account of life in the church, became a bestseller. Two editions have already sold out.

Jihadis turn on Pakistan : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, March 5, 2009, p. 8.
Noted American commentators like Journalist David Sanger have exposed the duplicity of the Pakistani military establishment, led earlier by Gen Musharraf and now by Gen Kayani, in supporting Taliban leaders and even informing Taliban fighters of impending American military operations. Gen Kayani described the top Taliban military commander, Jalaluddin Haqqani, as a "strategic asset". Sanger has also exposed the ISIs involvement in the bombing of the Indian Embassy in Kabul.

The ghosts of 1971 : K. Subrahmanyam, The Indian Express, New Delhi, March 5, 2009, p. 10.
Bangladesh Rifles mutiny exposes divisions harking back to the country's liberation.

Army personnel understand that the uprising was targeted not only at the Awami League government but also at the army itself, which is today against Wahhabi Islamism and collaborationism.

Sex, lies and the cloister : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, March 6, 2009, p. 9.
The Kerala church-related activities that are now the subject of much discussion become obvious only if we have a sense of history. At its debauched worst, several medieval Popes kept concubines, organised sexual orgies, and issued political decrees simply because its power was unquestioned. This selfsame character and machinery is at work here, in Kerala. The political class in the State and nation cannot dare antagonise the Christian lobby thanks to the almighty vote-bank.

The tab is on us : K Subrahmanyam, The Times of India, New Delhi, March 9, 2009, p. 12.
A seventeenth century mosque, built in the years after emperor Babar's reign, has been blown up in Pakistan. It was not blown up by non-Muslim but by extremist Muslims. It did not happen in a non-Muslim majority area but in a predominantly Muslim area-Peshawar. This was not a mosque where worship had been discontinued but one in which devotees thronged day after day, especially women. It was a Sufi mosque named after the Sufi. Pushto poet, Rahman Baba. There had been threats to the mosque earlier. In spite of those threats adequate security was not provided to the shrine and it was blown up early in the morning on the 5th of March.

Yash Pal panel tears into HRD : Hemali Chhapia, The Times of India, New Delhi, March 9, 2009, p. 9.
It has slammed the ministry for its "nervous and hurried response in starting new central universities", permitting "chaotic expansion in higher education", allowing undergraduate education to rot and swallowing autonomy through "intrusive bureaucracy and mindless regulation". The report has suggested:

- Universities should be self-regulatory bodies.
- Universities to be made responsible for academic content of professional courses.
- Curricular reforms to be topmost priority of the commission for higher education.

- Undergraduate programmes to be restructured to allow mobility.
- No single discipline or specialised university to be created.
- IITs and IIMs to be converted to full-fledged universities.
- Single accreditation window for all higher education institutes.

Where is the Indian prism? : Udayan Namboodiri, The Pioneer, New Delhi, March 14, 2009, p. 9.
America must be wondering whether democracy is such a good thing for Pakistanis and may not lose sleep over another Army takeover. Ultimately, we Indians too must ask ourselves if things were any better for us with a democratic Pakistan as neighbour. Let's not forget the Benazir era. History has shown that democratic Pakistan is as bad as a Pakistan under dictatorship when it comes to exporting terror, practice nuclear proliferation and breed other problems for the world at large and the region in particular.

From Budha to Radio Mullah : Manish Chand, The Tribune, Spectrum, New Delhi, March 15, 2009, p. 7.
Celebrated in the Hindu scriptures as *udyan* (garden), it's a stunningly picturesque Swat Valley where Buddha once walked, cultures intersected, poets sang and mystics came in search of peace. But, sadly, Swat Valley in northwest Pakistan has now become synonymous with unrest, bloodshed and Talibanisation.

Insecure in Pakistan : Divya A , The Times of India, New Delhi, March 15, 2009, p. 10.
A group of Hindus left Swat in Pakistan for India recently, pleading persecution. They were just the latest in a long line of migrants. Sunday Times examines their lives here. It is not quite the Partition and the Great Migration. But the steady trickle of Hindus crossing into India from Pakistan, and pleading for permission to stay here, underlines how little has changed in 61 years. The immediate provocation was the alleged persecution of Hindus at the hands of the Taliban. But social alienation too has taken its toll. More than 6,000 Pakistani Hindus migrated to India in recent months. They live on the edge - many sans valid documents, an official identity and hope - in Punjab. Haryana and Rajasthan.

Do not tolerate radical Islam : Tavleen Singh, The Indian Express, New Delhi, March 15, 2009, p. 7.
Instead of listening to the 'thinkers' and think tanks in Washington Mr. Obama would do better to listen carefully to what the Islamists themselves say loudly and clearly. He would discover that the objective of the worldwide *jihad* is to convert the whole world to radical Islam. They believe this is what Allah wants and are ready to die fighting to make Allah's wishes come true so that they can spend Eternity frolicking with those seventy-two virgins in Paradise. Odd, isn't it, that it's alright to get up to all sorts of mischief in heaven but a sin to do the same things on Earth?

China puts its money in Estern dual use tech firms : Pranab Dhal Samanta, The Indian Express, New Delhi, March 15, 2009, p. 1. & 2.

Decisive, moves by China in the past few months to invest in western companies dealing with dual use technology items at a time when most firms are reeling under the effects of the economic crisis have come as a warning signal to countries like India. For largely political reasons, Beijing had been finding it increasingly tough in the past to do business in these areas but is taking advantage of the changing times now. "China is "increasingly building its sophisticated aircraft, surface combatants, submarines and weapon systems while still purchasing select systems from overseas".

Orissa's fiery faultlines : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, March 17, 2009, p. 8.
There is a need to recognise that Kandhamal happened because the Kandha tribals were becoming increasingly agitated over the manner in which their land and privileges were being whittled away by Christians. So, when Swami Laxmanananda, who was fighting to preserve their rights, religion and culture, was gunned down and his body reputedly mutilated by men who wanted to give a 'message' to the community, their cup of resentment boiled over.

They Need Each Other : K Subrahmanyam, The Times of India, New Delhi, March 18, 2009, p. 16.
Just as China has leverage with America thanks to its large holding of US Treasury bonds, the US has a similar hold on China, with its power to reduce the value of those asserts. Therefore, the two countries have to collaborate with each other to ensure neither damages the other's interests.

Chinese threat looms large : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, March 19, 2009, p. 8.
While India received overwhelming international sympathy and support during the 26/11 terrorist outrage, the Chinese reaction was one of almost unbridled glee, while backing Pakistani protestations of innocence. The state-run China Institute of Contemporary International Relations claimed that the terrorists who carried out the attack came from India.
Thackeray defends Varun : TN Raghunatha, The Pioneer, New Delhi, March 19, 2009, p. 6.
Thackeray said, Making no bones about his admiration for Varun, the Sena chief signed off saying: "We have fallen in love with this Gandhi. This is despite the fact that the code of conduct for the Lok Sabha poll is in force Varun has our good wishes and blessings."

Change Bhagwat ke Sangh : Swapan Dasgupta, The Pioneer, New Delhi, March 20, 2009, p. 1.

Since the mid-1990's, however, the importance of Hindutva as a political rallying point has steadily declined. Yet, ironically, the importance of Hindutva as a social and even religious phenomenon has increased quite dramatically. Additionally, there is a new, assertive patriotism in the country. The public discourse, particularly the English media discourse, may be overwhelmed by secularist cosmopolitanism but Indians have simultaneously become more aware of their Indian and Hindu identities. Indian flag is far more visible today than was the case two decades or so ago. In the diaspora, this has translated into Hindu pride and even Hindu activism. Narendra Modi may be the exception. The Gujarat Chief Minister has grafted the energies of a modern society on a Sangh tradition. This is an experience waiting to be more widely emulated. In many ways, Bhagwat is ideally placed to tackle the challenges of the 21st century. As general secretary of the organisation during the tenure of KS Suddarshan, he has formidable organisational experience and familiarity with the entire country. This is coupled by ideological rigour. Bhagwat seems acutely aware that the Hindu movement runs on many parallel tracks and, sometimes, on different assumptions. As the head of the parivar, Bhagwat's responsibility is to both guide and ensure that the different streams are in broad harmony. The challenges before Bhagwat are daunting. This is not because either the Sangh or the Hindutva movement is in crisis but because the opportunities presented by the new, assertive India haven't been fully realised.

Of appeasement, And Nepal going India way : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, March 22, 2009, p. 5.

In Nepal, 10% of the population is Muslims and they have started creating trouble. In India, they were 9% in 1947, today they are 14.5% and scores of jihadi groups are targeting India. There may be millions of peace loving Muslims but this does not prove that Islam is a peace loving religion.

Varun was harsh, but so is truth : Kanchan Gupta, The Pioneer, New Delhi, March 22, 2009, p. 4.

The *Times of India's* online edition had two ads promoting itimes, its social networking group: 'Snub Varun Gandhi' and 'Join Sanjay Dutt fan club'. It would appear that in this wondrous land of ours, where rules are being increasingly set by a dissolute media, it is now politically correct to be a fan of a man who has been held guilty of aiding the terrorists who bombed Mumbai in 1993. NDTV began by referring to Mr Gandhi's "speech", and then switched over to "hate speech". Who's to fell our "secular' media it is horribly wrong? *Sed quis custodiet ipsos custodes?*

UPA has nothing to boast about : Ashwani Mahajan, The Pioneer, New Delhi, March 25, 2009, p. 8.
The Government has been claiming that inflation has come down to a mere three per cent. But the fact is that prices of food grains, edible oils, pulses, fruits and vegetables have increased considerably. It is only the prices of cars, electronic products and petroleum products that have declined due to the economic downturn. Nonetheless, the Government is taking undue credit by counting the same as its 'own' achievement.

Promises BJP must keep : Francois Gautier : The Pioneer, New Delhi, March 25, 2009, p. 9.
The curse of Hindus has always been disunity and betraying each other to the enemy. Today we see this trend again in the BJP where sometimes the highest party office-bearers can't even say hello to each other. The BJP should make it known that it will really build the Ram Mandir, protect temples, stop Christian conversions, honour India's gurus and impose some guidelines on media which have a pre-conceived notion about Pope and Islam but always see Hindu godmen and sadhvis through the eyes of 'secularism'.

Monk's 'suicide' spreads unrest : B Raman, The Pioneer, New Delhi, March 26, 2009, p. 9.
Tibetans are up in arms after a monk, who was arrested by the Chinese security services for keeping a picture of the Dalai Lama, 'escaped' from police custody and 'committed suicide'. Nobody believes the official version.

Red Dragon rising : Gurmeet Kanwal and Monika Chansoria, The Tribune, New Delhi, March 28, 2009, p. 13.
China's growing power and influence in Asia poses a strategic challenge to India. The Chinese armed forces are well ahead of their Indian counterparts in many areas of defence modernisation and the gap is slowly becoming unbridgeable.

Hatred Justified? : Manoj Mitta, The Times of India, New Delhi, March 29, 2009, p. 10.
Promise was made by Shiv Sena leader Manohar Joshi in Maharashtra's first election after the 1992-93 Mumbai riots and blasts. Joshi promised to turn Maharashtra into India's first Hindu state. He went on to head a Shiv Sena-BJP government but the Bombay high court struck down Joshi's election on the grounds that he had violated the constitutional commitment to secularism by seeking votes on the basis of his promise to establish a Hindu state. The Supreme Court overturned the high court decision. It played down the import of Joshi's promise. "In our opinion, a mere statement that the first Hindu state will be established in Maharashtra is by itself not an appeal for votes on the grounds of his religion but the expression, at best, of such a hope." Varun may well defend himself against the charge

of electoral offences by claiming that he too was merely expressing the hope that Pilibhit would be rid of Muslims after the elections and that he was not really appealing for votes on the grounds of his religion.

Hindus suffer in secular India : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, March 30, 2009, p. 9.
Partition was supposed to settle the two-nation issue raised by Jinnah. But it hasn't done so. The provisions in the Constitution are loaded in favour of minority communities, the majority feels distressed. Not only that, more urban property in India is owned by *waqf* boards than by any private party. These are lands which were confiscated by Muslim invaders and were handed over to their supporters. Zamindari was long ago abolished and the princely states were amalgamated into the Indian Union, but not the *waqfs*, which, in the opinion of Prof AAA Fyzee, are redundant and economically counter-productive. Many a Muslim country has nationalised these bards, but they flourish in India.

'Get Indian money back from foreign banks' : PNS, The Pioneer, New Delhi, March 30, 2009, p. 1.
Planning to make it a major poll issue, NDA's prime ministerial candidate LK Advani promised that, if voted to power, his Government at the Centre would ensure that Indian money in Swiss and other foreign banks estimated as 78 lac crores were brought back to the country.
Money brought back can …

- Relieve the debts of all farmers and the landless
- Can build world-class roads all over the country.
- Completely eliminate the acute power shortage in the country and also bring electricity to every unit rural home.
- Provide safe and adequate drinking water to all villages
- Construct good-quality houses, each worth Rs 2.5 lakh for 10 crore families.
- Provide Rs 4 crore to each of the nearly 6 lakh villages; to build, in every single village, a school with internet-enabled education a primary health centre and much more.

Challenging China : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, March 31, 2009, p. 16.

For India, Tibet is the core issue with China, which became its neighbour owing not to geography but to guns - by gobbling up the traditional buffer. The recent congressional resolution recognised India for its "generosity", in playing host to the Dalai Lama and Tibetan refugees. The Dalai Lama is India's biggest strategic asset because without him, the country would be poorer by several military divisions against China. India thus has a major stake in the succession issue, including in overseeing the training and education of the heir. Indian agencies must beware of any plot to assassinate the present incumbent.

Book Reviews

X - Ray of Islam, Publishers-Children of God, Society, M.G. Road, Kochi, p. 70. (The Key-words of Islam)

'To understand and expose Islam, one must study and analyze it in the light of the '*Quran*' and the '*Hadiths*' as well as the history of the development of Islam during the lifetime of Muhammad, the Prophet of Islam. So, for proper and effective understanding of Islam we must start from the basics. It begins with, the meanings of certain key words and concepts of Islamic theology.' *Allah*: 'The very foundation of Islam begins by negating other religions as reject the existence of any other Gods or Goddesses of other religions and thus branding the followers of others religions as ungodly.' *Islam*: According to the Quran, Islam is the only true religions (3/19) and those who believe in any religion other than Islam, they shall not be salvaged and they shall be punished heavily after their death (3/85,91) (For details, see Chapter-3) of the book.

It then proceeds to elaborate the basics of Islam by defining ***Quran, Musalman, Mumin, Din, Ghazi, Sharq, Mushriq, Kham, Jazia, Kharag, a land tax on non Muslims, Dhimmi, Shahid, Kafir, Manafiq,*** **(**hypocrite***, Murtaad,*** (apostate) ***Millat/Ummah, Khalifa, Jihad, Mujahid, Ansaar, Mal-e-Ganimat, Hadith, Sharia.*** The book describes the meaning of these concepts with clarity and any attempt to try to

interpret them in the light of secularism is to become out landish even in the context of Islam. In subsequent treatment examples are provided how the apologists have tried - to defend what is clearly indefensible. The first part of the book ends up by stating the illogic of equating the concept of Ishwar with Allah or "*Ishvar Allah Tero Naam*" which is false statement in the context of Islamic theology. That Islam means peace, is a misleader. One has to go through the Quran and find for himself if it is a religion of peace or conflict and war. It exist in denial of all other religions of the world. It is communism in the obverse form which will never rest unless the entire world is converted into *Dar-al-islam.* It has flourished mainly on compassionate and tolerant sub characters of other religions of the world. What is interesting is that Islamic concepts, practices and belief are in direct contradiction - virtually the obsolute opposite of the practices followed by other religions of the world. There has been a futile debate on the word '*kafir*' by the secularist. Even though in the simplest meaning it means atheist and a person belonging to another religion the linguists can vouchsafe that it has acquired a pejorative connotation of extreme hatred for the man belonging to the other religion. The book deals with the Quranic concepts extensively and brings to light the real meaning e. i. the subversion of civilisations and warns the civil society not to be misled by the secularists who are cutting the very branch of the tree on which they are sitting.

There are however mistakes in spelling of the Islamic key words which befuddle a man momentarily before he realises what actually it should have been for example *Shahid* should have been *Shaheed*, *Kharaz* should have been Kharaaj *Zakat* has not been mentioned Mal-e-Ganimat should have been Ghaneemat and so on. But this may be excused for being Arabic pronunciation and nomenclature which is difficult for a sub - continental to follow.

Jesme, Amen, an autobiography by - a nun of the Catholic Church

The Catholic Church in Kerala is shocked by the "revelations" of Jesme, a former nun, about the cases of sexual abuse in the church in her autobiography released a couple of days ago. The autobiography of Jesme, who quit nun's life following alleged harassment's in the church and after long struggles with the authorities with in it, describes in detail how priests exploit nuns sexually and harass them at the sign of disobedience and resistance. Fifty-two-year-old Jesme, who had been working as a professor and principal at St. Mary's College, Thrissur, had left her ascetic life last year following what she said was a long path of painful struggle for her amidst harassment's and exploitations. Since leaving the convent, she had talked to the Press about the alleged injustices and harassment's she had gone through in her 30-year-long convent life and had presented her case in several open foru**ms, mostly in Thrissur.**

-PNS Thrissur

Priyadarsh Mukherji : Netaji Subhas Chandra Bose-Contemporary Anecdotes, Reminiscences and Wartime Reportage, Har-Anand Publications, Rs. 795/-

Overturning the thesis that the spinning wheel or *satyagraha* won India its freedom, this book asserts it was the Springing Tiger called Netaji who expelled the British colonialists from India. The book uses unconventional methods to analyse the Indian freedom movement that acquired a new dimension beyond India's boundaries.

-The Pioneer, New Delhi,
March 8, 2009, p. 7.

Letter

Westernisation of Indian history: India discovered the very concept of '*Itihas'* from which the work 'history' is derived. The history of India and Hinduism is in Ramayan and Mahabharat not as set down by Western scholars in the forms of names and dates. The ultimate purpose of our Indian history was spiritual

enlightenment but unfortunately we have adopted Western idea of history that is learning by rote of names and dates. Although dates in Hindu history are subject to dispute, the lessons imparted are not.

-Jayesh A

The Pioneer, New Delhi,

March 1, 2009, p. 4.